प्रेम-ज्योति

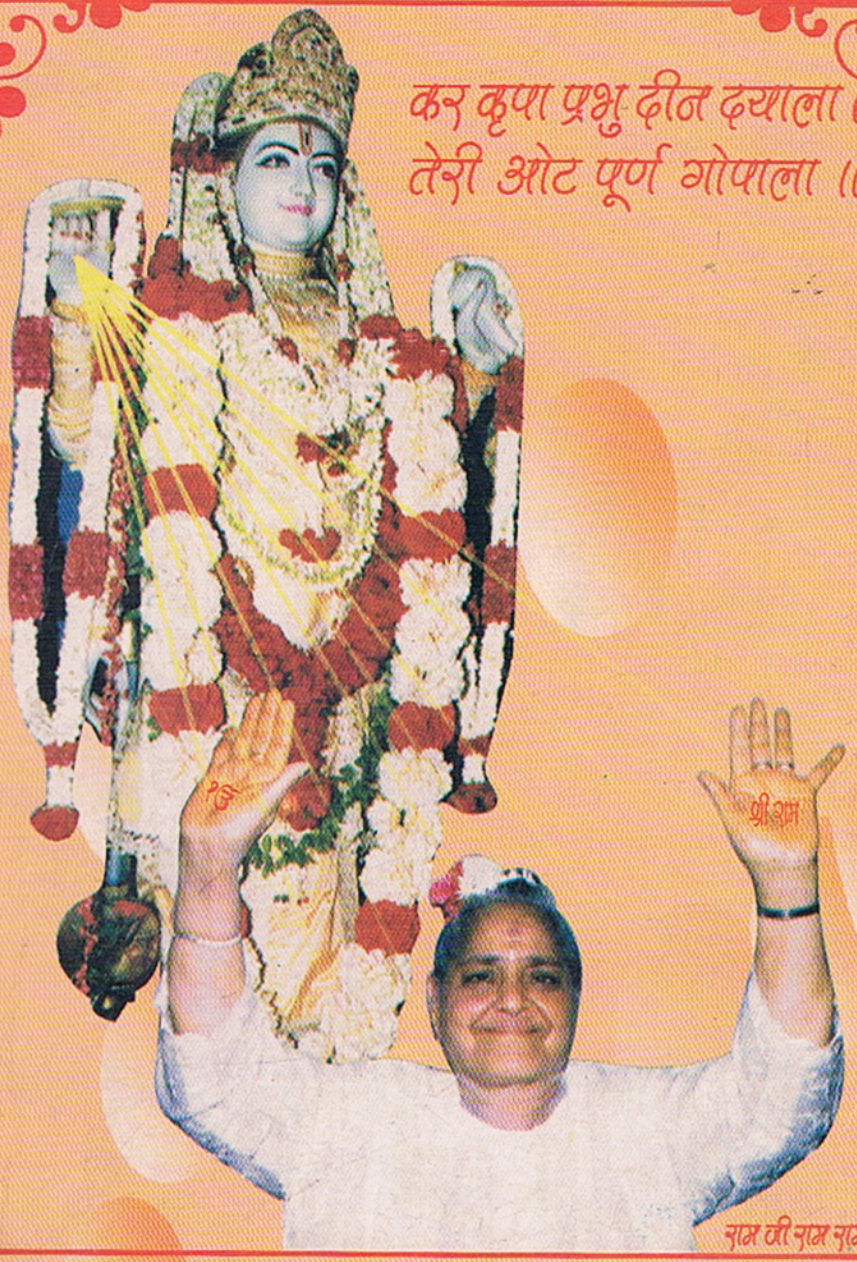

राम जी राम राम

तालिका

स0		पृष्ठ स0
1.	भूमिका	–
2.	आवाहन्	1
3.	प्रार्थना स्तुति (क)	3
4.	प्रार्थना स्तुति (ख)	6
5.	कर कृपा.....अर्थ	12
6.	प्रार्थना (आत्मा का नाश्ता)	13
7.	पंचामृत	21
8.	**U.S.A.** का विचार (5.8.2000)	22
9.	विचार (6.8.2000)	23
10.	विचार (8.8.2000)	25
11.	विचार (9.8.2000)	28
12.	विचार (15.8.2000)	29
13.	कृपा की चौपाईयाँ	30
14.	मेरी छोटी सी है नाव	33
15.	राम कहो राम कहो	37
16.	हमारे हैं श्री रघुनाथ	38
17.	राम जी मेरी वन्दना स्वीकार हो	39
18.	तेरी शरण श्री राम मैं आयो	40
19.	मेरी झोपड़ी दे भाग	42
20.	पत्ते पत्ते डाली डाली	44
21.	मेरे बाँके बिहारी लाल	45
22.	मन रखियो अपने चररान में	46
23.	कृष्ण गोविंद गोपाल गाते चलो	47

24.	मैं तो जपू सदा तेरा नाम	48
25.	मांगा है मैंने श्याम से वरदान एक ही	49
26.	ध्वनि, श्री कृष्ण गोबिंद हरे मुरारे	50
27.	कृष्ण कहने से तर जायगा	51
28.	अब आन मिलो घनश्याम	52
29.	पंजाबी भजन-मैं बलिहारी सतगुरू मेरे	53
30.	जब सतगुरू आते हैं	55
31.	हथ विच माला नू फड़ के	56
32.	मेरा आपकी कृपा से सब काम हो रहा है	57
33.	मेरे देवा सतगुरू देवा	58
34.	ध्वनि-हरि शरणम् हरि शरणम्	60
35.	राम जी से नेहा लगाय लयो रे	62
36.	सांवरे ले चल परले पार	63
37.	सतगुरू दीनदयाला तों वारी जां	64
38.	काम की बातें	65
39.	पंजाबी भजन (सेवादार हाँ गुनहगार हाँ)	67
40.	पंजाबी भजन (मेरे रामजी जेहा सोहराा)	68
41.	गुरू जी तोरे चरण प्रीति मोरी लागी	70
42.	साँवरिया नन्दलाल हमारे	71
43.	जय जय जय गुरूदेव तुम्हारी	72
44.	बधाई भजन, जन्मे हैं राम रघुरइआ.....	73
45.	बधाई भजन, मथुरा में जन्मे कन्हैया....	74
46.	भजन चेतावनी-नाजुक घड़ी है आई	75
47.	पंजाबी भजन-गुरू चररााां दे विच मत्था	76
48.	भजन रामकृपा, पार भवसागरों उतार देंदी ए	78
49.	मेरे हारां वाले श्याम.....पहाड़ी भजन	79

50.	नाम तेरा है तारराा हारा.....पहाड़ी भजन	80
51.	10 बातें सदैव याद रखो	81
52.	राम नाम सुखदाई भजन करो भाई	82
53.	असां तेरे बिना कियां रैराा हो-पहाड़ी भजन	84
54.	राम जी के विचार (उपदेश)	85
55.	सतगुरू आपने कमाल कर दिया	87
56.	जगत में उनकी मिटी है चिन्ता	89
57.	पंजाबी भजन-नी मैं सोणी लगा श्याम प्यारे	90
58.	श्यामा, एवे न बजाया करो बंसरी	91
59.	शब्द-हरि राम राम राम रामा	92
60.	शब्द-मैं बन्दा बेखरीद	93
61.	शब्द-मेरे सतगुरा मैं तुझ बिन अवर न कोई	94
62.	ध्यान	96
63.	गुरूदेव की कृपा का चमत्कार (1)	100
64.	गुरूदेव की कृपा का चमत्कार (2)	102
65.	कर कृपा मंत्र का चमत्कार	103
66.	आनन्द साहिब	104
67.	श्लोक	106
68.	अरदास	107
69.	प्रार्थना	108
70.	आरती (सतगुरू भगवान की)	110
71.	आरती (नारायण भगवान की)	112
72.	आरती (श्री शंकर भगवान की)	113
73.	त्वमेव माता च पिता त्वमेव	114
74.	सब पर दया करो भगवान	115

श्रीराम

(प्रेम ज्योति)

भूमिका

परम पूज्य श्री राम जी द्वारा रचित यह **प्रेम ज्योति** नामक पुस्तक रुपी कृपा प्रसाद आपके कर कमलों में समर्पित है । यह उनकी षष्ठ दशम् अर्थात् सोलहवीं पुस्तक है । जिसके अन्तर्गत.....

उनके उपदेशों का सार, समय समय पर दिये सार गर्भित वचन, भजन व शब्दों का सुन्दर संचयन किया गया है ।

कृप्या इसे पढ़े दूसरों को पढ़ावें, मनन करें व क्रियान्वित रुप में अपने जीवन में उतारें । तभी इसके लिखने की सार्थकता है ।

आशा है यह सुमधुर संकलन आपको अवश्य पसन्द आयेगा ।

जो भी त्रुटि हो गई हों पाठकगरा कृप्या क्षमा करें ।

भवदीया

रचयियता एवं संकलनकर्ता

प्रेषिता

"श्री राम जी"

कर कृपा प्रभु दीन दयाला ।

आवाहन्

राम जी राम राम

श्रीराम

सतनाम

वाहिगुरु

हरि हरि ओ ऽ ऽ ऽ म्

श्रीराम

हे राम जी ।

हमारा हाथ पकड़ कर रखना

श्रीराम

हे राम जी ।

हमारे मन को स्थिर कर दो

श्रीराम

हे राम जी ।

हम समर्परा करते हैं,

स्वीकार करो 3 बार

बेड़ा पार करो

गोविन्दाय नमो नमः

माधवाय नमो नमः

केशवाय नमो नमः

सतगुरु देवाय नमो नमः

प्यारे प्यारे राम जी की जय

विष्णु भगवान की जय

सत्य नारायरा स्वामी की जय

प्यारी प्यारी साध संगत की जय

अपने राम जी का स्वागत करते हैं जी ।

सुस्वागतम् राम जी 2+1: 3 बार

शरराागतम् राम जी 3 बार

परमानन्दम् राम जी 3 बार

मेरे मात पिता राम जी 3 बार

मेरे बन्धु सखा राम जी 1 बार

मेरे सर्वस्व हैं राम जी 2 बार

सद्बुद्धि दो राम जी - 3 बार

किरपा कर दो 2+1: 3 बार,

बोलो सतगुरु देव भगवान की जय

अपने इष्ट देव का आह्वान करने के बाद इनके चररणों में नमस्कार कर के इन से कृपा मांगेगे, भक्ति मांगेगे ।

प्रार्थना स्तुति

नमो कृष्णा भगवान बंसी बजैया,
नमो कृष्णा संकट में धीरज धरैया ।
नमो कृष्णा भक्तों के दुःख के हरैया,
नमो नन्द नन्दन हमारे कन्हैया ।
नमस्कार चररणों में आनन्द दाता,
नमस्कार सर्वस्व ज्ञाता विधाता ।
नमो कृष्णा केशव कन्हैया बिहारी,
नमो कृष्णा गोविन्द मोहन मुरारी ।
नमो कृष्णा अवतार धारी खरारी,
नमो भक्त वत्सल नमो धर्म धारी ।
तुम्हारा ही भक्तों में भगवान बल है,
तुम्हीं से सदा भक्त जीवन सफल है।
सुजनदास जन के सुमन श्याम तुम हो,
दुखी दीन दुनिया के आधार तुम हो ।

सुना है तुम्हें दास जन जब सिमरते,
नही आप फिर एक क्षण धीर धरते ।
दयाकर दयामय सकल दुःख हरते,
हृदय से लगा प्रेम से प्यार करते ।
तुम्हारे ही बल से मगन भक्त रहते,
हरे कृष्णा, श्री कृष्णा, श्री कृष्णा कहते।
प्रभो दासी को भक्ति का मय पिला दो,
मुझे मन के मन्दिर में दर्शन दिखा दो।
हरे कृष्णा श्री कृष्णा मुझ को रटा दो,
इसी नाम का चक्र मन में चला दो ।
रहे मेरे मन में अटल कृष्णा भक्ति,
मधुप मै बनूं और कमल कृष्णा भक्ति ।
लगा लूं लगन तुम में मुरली मनोहर,
रहूँ मैं मगन तुम में मुरली मनोहर ।
रखूँ अपनां मन तुममें मुरली मनोहर,
मिलूं त्याग तन तुममें मुरली मनोहर ।

प्रभो ! अब दिखे मुझ को जीवन खवैया,
मुझे रट लगे श्री कन्हैया कन्हैया ।

ज्ञान अंजन गुरु दीआ,
अज्ञान अन्धेर विनास ।
हरि कृपा ते सन्त भेंटिआ,
'नानक' मन प्रगास ।

फिरत फिरत प्रभु आइआ,
परिआ तऊ शरणाई ।
'नानक' की प्रभु बेनती,
अपनी भक्ति लाये ।

फिर नमस्कार करेंगें कि सदा हम सब पर आप प्रसन्न रहो । अगर हम से कोई पाप हो गये हैं, तो अपने बच्चे समझ कर क्षमा करें ।

प्रार्थना

नमामि नारायरा दीन बन्धो,
हरे मुरारे करूराा के सिन्धो ।
हरो हमारे अघ नाथ सारे,
प्रसीद देवेश जगन्निवास ।
प्रसीद देवेश जगन्निवास,
नमो वसुदेवम् देवा प्रसीद ।

II

न नाथ विद्या न बल है न शक्ति,
न बुद्धि श्रद्धा न प्रधान भक्ति ।
प्रभो सहारा चररााम्बुजों का,
प्रसीद देवेश जगन्निवास ।
प्रसीद देवेश जगन्निवास,
नमो वसुदेवम् देवा प्रसीद ।

III

न तात माता न सुबन्धु भ्राता,
न पुत्र त्राता, अपना दिखाता ।
बिना तुम्हारे हरि कौन मेरा,
प्रसीद देवेश जगन्निवास ।
प्रसीद देवेश जगन्निवास,
नमो वसुदेवम् देवा प्रसीद ।

IV

तुम्हीं पिता माता सुबन्धु प्यारे,
तुम्हीं सुविद्या धन हो हमारे ।
सखे न रूठो अब मान जाओ,
प्रसीद देवेश जगन्निवास ।
प्रसीद देवेश जगन्निवास,
नमो वसुदेवम् देवा प्रसीद ।

V

नाता भला क्या जग से हमारा,
आये यहाँ क्यों कर क्या रहें हैं ।
सोचो विचारो हरि को पुकारो,
प्रसीद देवेश जगन्निवास ।
प्रसीद देवेश जगन्निवास,
नमो वसुदेवम् देवा प्रसीद ।

VI

देहान्त काले तुम सामने हो,
बंशी बजाते मन को लुभाते ।
गाते यही मैं, तन नाथ त्यागू,
प्रसीद देवेश जगन्निवास ।
प्रसीद देवेश जगन्निवास,
नमो वसुदेवम् देवा प्रसीद ।

VII

किये अनेकों अघनाथ मैंनें,
विचार मेरा मन काँपता है ।
क्षमा करो पाप समस्त मेरे,
प्रसीद देवेश जगन्निवास ।
प्रसीद देवेश जगन्निवास,
नमो वसुदेवम् देवा प्रसीद ।

VIII

सोचो विचारो हरि को पुकारो,
क्या साथ लाये, क्या ले चलोगे ।
जावे यही संग हरि नाम प्यारा,
प्रसीद देवेश जगन्निवास ।
प्रसीद देवेश जगन्निवास,
नमो वसुदेवम् देवा प्रसीद ।

IX

सच्चे सखा हैं हरि जी हमारे,

माता पिता शील सुबन्धु प्यारे ।

भूलो न भाई दिन रात गाओ,

श्रीराम श्रीराम श्रीराम श्रीराम ।

श्रीराम श्रीराम श्रीराम श्रीराम,

नमामि नारायरा दीन बन्धो ।

हरे मुरारे करुरा के सिन्धो ।

अपने इष्ट देव को नमस्कार कर के हम उन की कृपा की याचना करते हैं, केवल उनकी कृपा से ही हमें भक्ति प्राप्त हो सकती है ।

भक्ति क्या है ?

अपने प्यारे का एक-एक क्षण चिन्तन होना, इस माया जाल में जीव इतना मोहित हो जाता है कि यह प्रभु के दिये पदार्थ पाकर, देने वाले को भूल जाता है । इसलिए नाना प्रकार के दुःख पाता है ।

फिर भाग्य जागृत होते हैं तो सद्गुरु मिलते हैं,

जो इसे सीधे मार्ग पर लाते हैं, और समझाते हैं ।

ए भोले जीव तूँ इस प्रकार से, इस प्रार्थना द्वारा भक्ति मांगा कर, दिन में चार बार, भक्ति माँग, प्रभु की कृपा माँग, रोज अपने अवगुणों के लिए क्षमा याचना कर, तभी तूँ अन्त समय तक सुधर जायेगा, फिर तेरा अगला जन्म भी अच्छा होगा ।

जैसा कि भगवान ने हमें, अर्जुन को लक्ष्य बना कर समझाया, कि अगर अन्त समय में मेरा सिमरण करते हुए जायेगा तो तुझे अच्छे वंश में जन्म दूगां, जिससे तेरी इस जन्म की भक्ति चालू रहेगी फिर ऐसे समझाया !

तस्मात् सर्वेषु कालेषु
मामानुस्मरणय युद्धःय च

ऐसा किस प्रकार से हो सकता है, इतने माया के जाल में फसे हुए जीवों के लिए ?

हो सकता है, अगर हम यह प्रार्थना नित्य प्रति बिना नागा किये, दिन में चार बार अवश्य करें ।

सुबह दोपहर शाम और रात को हमने प्रार्थना इस प्रकार करनी है पहले तो पूर्ण प्रभु की कृपा मांगनी है पांच बार । पूर्ण विश्वास से यह मन्त्र प्रातः उठते ही पांच बार अवश्य बोलना है।

कर कृपा प्रभु दीनदयाला ।
तेरी ओट पूर्ण गोपाला ।।

5 बार

(अर्थ)

हे पूर्ण प्रभो आप आज के दिन, इस मन पर, बुद्धि पर, शरीर पर, परिवार पर, बाहर भी जहां हम हों, अपनी पूर्ण कृपा रखना, कि सांसारिक कार्यों में उलझ कर हम आप को न भूलें।

फिर स्नान करने के बाद यह पूरी प्रार्थना (भक्ति याचना) अवश्य करनी है, बाद में नाश्ता आदि लेना है, क्योंकि पहले यह आत्मा का नाश्ता लेना है।

"आत्मा के लिए नाश्ता"

दोपहर का भोजन, शाम का भोजन, रात का भोजन।

यह प्रार्थना इस प्रकार है।

कर कृपा प्रभु दीनदयाला ।
तेरी ओट पूर्ण गोपाला ॥

5 बार

करो दया, करो दया, करो दया, मेरे सांई,
ऐसी मति दीजे मेरे ठाकुर सदा सदा तुध ध्याई ।
स्वास स्वास सिमरहु गोविन्द,
मन अन्तर की उतरै चिन्त ।
जाचक जन जाचै प्रभु दान,
कर किरपा देवहु हरि नाम ।
साध जना की मागूं धूरि,
पारब्रह्म मेरी श्रद्धा पूरि ।
सदा सदा प्रभु के गुण गाऊँ,
स्वास स्वास प्रभु तुम्हें ध्याऊँ ।

चरण कमल सिंऊ लागे प्रीत,
भगति करूँ प्रभु की नित नीत ।
एक ओट एको आधार,
नानक मांगे नाम प्रभु सार ।
मंगल भवन अमंगल हारी,
द्रवहु सु दशरथ अजिर बिहारी ।
दीन दयाल विरद संभारी,
हरहु नाथ मम संकट भारी ।
राम कृपा नाशहिं सब रोगा,
जो ऐही भांति बने सयोंगा ।
जां पर कृपा राम की होई,
तां पर कृपा करे सब कोई ।
जां पर कृपा दृष्टि अनुकूला,
ताहि न व्याप त्रिविध भवशूला ।
राखा एक हमारा स्वामी,
सगल घटा का अन्तरयामी ।
ऐसी कृपा करो प्रभु मेरे,
हरि नाम न विसरे काहू बेरे ।

जगत जलंधा राख लै,
अपणी किरपा धार ।
जित द्वारै उभरै,
तितै लेहु उभार ।
सतगुरु सुख वेखालिआ,
सच्चा शब्द विचार ।
नानक अवर न सूझई,
हरि बिनु बख्शनहार ।
दडंवत वन्दना अनिक बार,
सर्वकला समरथ ।
डोलन ते राखो प्रभु,
'नानक' दे कर हथ ।
ज्ञान ध्यान किछु कर्म न जाणा,
सार न जाणा तेरी ।
सब ते बडा सतगुरू नानक,
जिन कल राखी मेरी ।
सर्वकला भरपूर प्रभु बिरथा जानन हार ।
जा के सिमरण उधरिए, नानक तिस बलिहार ।

करण कारण प्रभु एक है,
दूसर नाहि कोय ।
''नानक'' तिस बलिहारणे,
जल थल महिअल सोय ।
दीनदरद दुख भंजना,
हरि घट घट नाथ अनाथ ।
शरण तुम्हारी आइओ,
दासी (नानक) के प्रभु साथ ।
सगल द्वार को छाड़ के,
गहयो तुहारो द्वार ।
बाँह गहे की लाज अस,
गोविन्द दास तुम्हार ।
जे मैं भूल विगाड़आ,
न कर मैला चित्त ।
सहिब गौरा लोड़िऐ,
नफर बिगाड़े नित ।
जैसा कैसा हूँ मैं तेरा,
क्षमा करो सब अवगुण मेरा ।

जेता समुद्र सागर नीर भरिआ,
तेते अवगुण हमारे ।
दया करो किछु मेहर उपावो,
डुबदे पत्थर तारे ।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणम् त्वमेव,
त्वमेव सर्वम्, मम देव देव ।
श्रीराम, जय राम, जय जय राम,
शंकर हरिऊँ, जय जय सिया राम,
जय जय हनुमान ॥

आंख, कान, मुख, हृदय, सिर पर हाथ रखते हुए पांच-बार बोलिए

कर कृपा प्रभु दीनदयाला ।
तेरी ओट पूर्ण गोपाला ॥

5 बार

रक्षामन्त्र (कवच)

सब अंगों पर हाथ से स्पर्श करते हुए बोलिए ।

सिर मस्तक रख्या पारब्रह्म,

हस्त काया रख्या परमेश्वरः,

आत्म रख्या गोपाल स्वामी,

धन चररा रख्या जगदीश्वरः,

सर्वरक्षा गुरुदयालः,

भय दुख विनाशने, भक्तिवत्सल अनाथ नाथे,

शरण नानक पुरख अच्युत ।

दोहा

शुभ चिन्तन गोविन्द रमण,
निर्मल साधू संग ।
नाम न विसरे इक घड़ी,
कर कृपा भगवंत ।
आपे हर इक रंग है,
आपे बहुरंगी ।
जो तिस भावे नानका,
साई गल चंगी ।
पूरा प्रभु आराधिआ, पूरा जा का नाऊ ।
नानक पूरा पाइआ, पूरे के गुरा गाउ।
राम रमहु बडभागिओ,
जल थल महिअल सोय ।
नानक नाम आराधिए,
विध्न न लागे कोय ।
रे मन ता को ध्याईए,
सब विधि जा के हाथ ।
राम नाम धन संचिऐ,
सदा ही निबहे साथ ।
पारब्रह्म परमेश्वरः पूर्ण सच्चिदानन्द,

नमस्कार मेरी आपको भक्तन के अंग संग।

सत्गुरू मेरा सूरमा,
करे शब्द की चोट,
मारे गोला ज्ञान का,
ढाहे भ्रम का कोट ।

परमानन्द कृपायतन,
मन परिपूरन काम ।
प्रेम भक्ति अनपायनी,
देहु हमें श्रीराम ।

बार बार वर माँगहु हर्ष देहु श्री रंग,
पद सरोज अनपायनी, भगति सदा सतसंग।

नाथ एक वर मांगहु,
राम कृपा कर देहु ।
जन्म जन्म पद कमल रति,
कबहुं घटे जनि नेहु ।

सियापति राम जय जय राम,
करो कल्याण जय जय राम,
जपाओ नाम जय जय राम,
लगाओ ध्यान जय जय राम,
रहो मेरे पास जय जय राम,
कभी न हूँ उदास जय जय राम ।

पंचामृत

1. कर कृपा प्रभु दीनदयाला,
   तेरी ओट पूर्ण गोपाला ।
2. राम कृपा नाशहिं सब रोगा,
   जो एहिं भांति बने संयोगा ।
3. जा पर कृपा राम की होई,
   तां पर कृपा करे सब कोई ।
4. जां पर कृपा दृष्टि अनुकूला,
   तांहि न व्याप त्रिविध भवशूला ।
5. राखा एक हमारा स्वामी,
   सगल घटा का अन्तर्यामी ।

विधि: *एक गिलास या लोटे में जल लेकर चम्मच से हिलाते हुए यह पांचों चौपाई पांच-2 बार बोल कर घर में सभी को पिलावें व स्वयं पियें ---- इससे सभी प्रकार के रोग ठीक हो जाते हैं।*

श्री राम

U.S.A. में कुछ विचार प्रगट हुए

आज का विचार 5.8. 2000

यहां U.S.A. में देखा कि यहां शारीरिक सुख सब प्रकार के हैं, भक्ति में भी अच्छा मन लगा, सारा दिन ऐकान्त, सात्त्विक भोजन, वातावरण बड़ा शुद्ध । हमें तुलसीदास जी की चौपाई याद आई?

नहीं दरिद्र सम दुख जग मांही

संत मिलन सम सुख जग नांही

अगर सांसारिक सुखों के साथ-साथ सद्गुरू या सच्चे संत मिल जायें, तो क्या आनन्द जीवन में आ जायें ? वह हमें मन्त्र दें, और वह मन्त्र हमारे अन्दर सहज अवस्था में चलता रहे जैसे हम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला ।
तेरी ओट पूर्ण गोपाला ।।

मन्त्र का जाप करते रहते हैं, मन में यह भाव रख कर कि हे पूर्ण प्रभु आपकी कृपा से क्या नहीं हो सकता, आप अपनी कृपा से मेरा ध्यान अन्तरमन में कर दो, सारे विकार मिटा दो, अपना साक्षात्कार करवा दो, सचमुच इस मन्त्र के जाप से अवश्य ही हमारे विकार–काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार धीरे–धीरे नाश हो जायेंगे । जिसमें दुर्गुण नहीं है, वह भगवत् स्वरूप ही हो जाता है। वहां खूब जाप चला, सब को बुला कर छुट्टियाँ दिलवा कर इस मन्त्र का अखंड यज्ञ भी करवाया, मन प्रसन्न हो गया ।

श्रीराम
6.8.2000 सोमवार

समय **4 A.M.**

जिस कुटिया में रहते थे, वहां बाहर गेट पर मोटा मोटा '**श्रीराम**' तथा '**कर कृपा प्रभु दीनदयाला तेरी ओट पूर्ण गोपाला**' लिखा था । पता लग जाता था कि यह भारतवासी का घर है, लोग

जल्दी से पहचान जाते और अन्दर आ जाते थे ।

हमें विचार आया इसी प्रकार अगर हमारी अन्दर तथा बाहर की जीह्वा पर गुरू मन्त्र लिखा जाता हैं तो भगवान जल्दी ही अन्तर में प्रगट हो जाते हैं।

राम नाम मणि दीप धर,
जीह्वा देहुरी द्वार ।
तुलसी भीतर बाहरे,
जो चाहसि उजियार ।
जीह्वा गुण गोविन्द भजहु,
कर्ण सुनहु हरि नाम ।
कहो नानक सुन रे मना,
परै न जम के धाम ।

दरवाजे पर गुरूमन्त्र लिखने से यह भी लाभ है कि जब हम बाहर जाते हैं तो अपने आप ही पढ़ा जाता है, फिर बाहर हमारी प्रभु रक्षा भी करते हैं। ऐसा बताने वाला भी तो होना चाहिए और पूर्ण विश्वास भी होना चाहिए।

राम जी राम राम **श्रीराम**

कर कृपा प्रभु दीनदयाला। 1.1.2001
तेरी ओट पूर्ण गोपाला ॥

श्रीराम

8.8.2000 मंगलवार

समय 10 P.M.

इस कुटिया में Automatic Lights लगी हुई है। यह कुटिया शोर गुल से दूर जंगल में है । यहां बाहर की Street Lights भी नही है । प्रात: केवल दो हिरण आते हैं और कोई पक्षी जानवर नहीं दिखाई देता है। जब गाड़ी आती है तो यह Automatic Lights जल जाती है, जब हम अन्दर चले जाते हैं तो Off हो जाती है ।

हमें विचार आया ?

अगर हमारा गुरु मन्त्र सहज अवस्था में अन्तर में चलने लगे तो हम भी जल्दी ही अन्तर ज्योति देख सकते हैं, Introvert हो सकते हैं।

हमारा जीवन भी आनन्दमय ज्योति स्वरूप हो सकता है । सहज अवस्था के लिए भी पूर्ण कृपा की आवश्यकता है इसलिए जब हम *''कर कृपा''* के मन्त्र का जाप करते हैं तो भाव से करना चाहिए। हे प्रभु ! अपनी कृपा से हमारी भी

सहज अवस्था कर दो, हमें अन्तरमुख कर दो। इस प्रकार अवश्य ही एक दिन प्रप्ति हो ही जायेगी, आशा और विश्वास कभी नहीं खोना।

यहाँ हम बार-बार कुटिया कह रहे है क्योंकि U.S.A. में सारे घर Mostly लकड़ी के ही होते हैं, सचमुच ऋषिमुनियों की कुटिया ही लगते हैं।

श्रीराम

9.8.2000

आज का विचार

अभी हम ध्यान में बैठने लगे तो हमारे सामने पैडस्टिल पंखा चल रहा है । इसके पीछे सूर्य की किरणें भी आ रही हैं । जैसे जैसे पंखा घूम रहा है, इस की परछाई भी घूमती जा रही है। अभी सूर्य पीछे चला गया तो परछाई का घूमना भी बन्द हो गया ।

हमें विचार आया ?

यह नश्वर शरीर भी परम् पिता के प्रकाश से ही घूम रहा है, अन्तरात्मा (जिसे हम प्रकाश के रूप

में देख सकते हैं) जब वह अन्तर से निकल जाती है तो इस परछाई का घूमना बन्द हो जाता है

जैसा कि गुरु साहब फरमाते है ।

पानी केरा बुदबुदा, अस मानस की जात ।
देखत ही छिप जायेगा, ज्यों तारा प्रभात ॥

गर्व करता है देह को, विनसे छिन में मीत ।
जहं प्राणी हरि जस कहो, नानक तहँ जग जीत ।

इस लिए हमें उस ज्योति को देखने के लिए साधना, धारणा, ध्यान, समाधि, जप, तप, पूजा आदि ज्यादा से ज्यादा करने चाहिए । यह भी कृपा से ही हो सकते हैं ।

रामजी राम राम **श्रीराम**

2.1.2001

कर कृपा प्रभु दीन दयाला ।
तेरी ओट पूर्ण गोपाला ॥

श्रीराम

आज का विचार 9.8.2000

9 P.M. in U.S.A. & 7 A.M. in India

अगर हमें सोना मिट्टी दोनों बराबर लगते हैं तभी हम ब्रह्म ज्ञानी हैं
क्योंकि

ब्रहम ज्ञानी आप परमेश्वरः

(सुखमणी साहब)

यह केवल पूर्ण प्रभु की कृपा से ही हो सकता है । कृपा मागें कि हमारे अन्तरमन में सदा नाम चलता रहे तब स्वयं ही सारी तृष्णाएं समाप्त हो जायेंगी । जिस में और कोई भी तृष्णा नहीं है वही ब्रहम स्वरूप है। इस के लिए दवाई है - गुरुमंत्र

कर कृपा प्रभु दीनदयाला ।
तेरी ओट पूर्ण गोपाला ॥

श्रीराम

आज का विचार 15.8.2000

यहाँ U.S.A में हर एक चीज पर उसकी सारी Value पूरे Detail से लिखी होती है । जो पढ़े लिखे हैं वह तो सारा दिन यही पढ़ते रहते हैं फिर एक दूसरे से पूछते भी हैं।

ठीक इसी प्रकार

पूर्ण प्रभु, पूर्ण सद्गुरु, हर समय लिख लिख कर, गा गा कर, समझा समझा कर अपने प्रिय शिष्यों को नाम की महिमा बताते रहते हैं और नाम देते हैं । जिनपर कृपा हो जाती है, अन्दर नाम चल पड़ता है वह एक Second के लिए भी अपने प्रभु को नहीं भूलते । जीते जी परमपद को प्राप्त कर लेते हैं। इसलिए गुरु साहब ने फरमाया–सन्तों का संग उन की चरण रज की मांग अवश्य करते रहो जैसा कि पीछे Breakfast for the Soul में बताया गया है।

साध जना की मांगू धूरि,
पारब्रहम मेरी श्रद्धा पूरि ।
सदा सदा प्रभु के गुण गाऊं,
स्वास स्वास प्रभु तुम्हें ध्याऊँ ।

जिस का ध्यान हर समय प्रभु चिंतन में रहता है, सब में अपने प्रभु की झलक देखता है वही भक्त, हरिजन, या हरिदास कहलाता है । उनके लिए रामायण में गुरुवाणी में ऐसे कहा गया है?

मोरे मन प्रभु अस विश्वासा ।
राम ते अधिक राम कर दासा।

(रामायण)

हरिजन हरि अंतर नहीं,
नानक साची मान ।

(गुरुवाणी)

जो प्राणी निशदिन भजे,
रुप राम तह जान ।

(गुरुवाणी)

परन्तु सारे भजन नहीं कर सकते

कोटन में नानक कोऊ,

नारायण जहं चीत्त ।

संसार जो भी कहे हमने अपने सतगुरु की बात माननी है और सदा प्रभु ध्यान में रहने के लिए कृपा अवश्य मांगनी है ।

कर कृपा प्रभु दीनदयाला ।

तेरी ओट पूर्ण गोपाला। ।।

रामजी राम राम **3.1.2001**

यह मूल मन्त्र महाराज जी का है ।

कर कृपा प्रभु दीनदयाला ।

तेरी ओट पूर्ण गोपाला। ।। (अर्थ)

हे पूर्ण प्रभु आप इस छोटे से बच्चे पर, (जो अभी कुछ नहीं जानता) अपनी कृपा करना, मुझे तो केवल आप का ही आश्रय है, सहारा है। सांसारिक सहारे तो सारे नश्वर है, देखते-देखते जा रहे हैं ।

कृपा से क्या क्या होता है? सब कुछ हो जाता है। रामायण मय्या भी इस मन्त्र की साक्षी हैं।

रामायण में हर काण्ड में कृपा की महत्ता प्रकट की गई है । इसीलिए हम इसी मन्त्र का जाप अधिक करते हैं, रामजी हमारे से करवाते रहते हैं।

हम रामायण में कृपा की चौपाईयाँ, दोहे, छन्द आदि पढ़ते हैं जिससे हमारी आस्था इस मन्त्र में और भी सुदृढ़ हो जाये ।

केवल बालकाण्ड में 40 चौपाइया कृपा की महत्ता बताती है । यहाँ पाँच चौपाइयों से अपने मन को समझायेंगे कि ऐ मन तू केवल राम जी की कृपा से ही पूर्णता प्राप्त कर सकता है ।

1. **मोरि सुधारहिं सो सब भाँति,**
   जासु कृपा नहीं कृपा अघाती ।
2. **राम कृपा नाशहिं सब रोगा,**
   जो एहि भाँति बने संयोगा ।
3. **तुम कृपाल जा पर अनुकूला,**
   ताहिं न व्यापै त्रिविध भव शूला ।
4. **जां पर कृपा राम की होई,**
   तां पर कृपा करे सब कोई ।
5. **राम कृपा के तेहिं अधिकारी,**
   जा को सत संगति अति प्यारी ।

भजन

मेरी छोटी सी है नाव, तेरे जादू भरे पाँव,
मोहे डर लागै राम, कैसे बिठाऊ तुम्हें नाव में ।
रामजी कैसे बिठाऊँ तुम्हें नाव में ।

I

जब पत्थर से बन गई नारी,
ये है काठ की नाव हमारी ।
पालूं इसी से परिवार, मेरा यही रोजगार,
सुनो सुनो जी सरकार ।
कैसे बिठाऊँ तुम्हें नाव में ।

मेरी .....

II

प्रभु एक अरज मेरी मानो,
अपने चरणों की धूलि धुलवालो ।
मेरा संशय हो जाय दूर, सुनो सुनो जी हजूर,
अगर तुमको हो मंजूर,
प्रभु तब तो बिठाऊँ तुम्हें नाव में ।

मेरी .....

III

बड़े प्रेम सहित पांव धोये,
पाप जनम जनम के धोये ।
हुआ उसका मन प्रसन्न, कर के राम दर्शन,
संग सीता लक्ष्मण, प्रभु बैठे रहो जी मेरी नाव में ।
मेरी .....

IV

धीरे-धीरे वह नाव चलाता,
और गीत खुशी के गाता ।
यूंही कहता मन मन में, सूरज डूबे इक क्षण में ,
राम नहीं जायँ बन में,
प्रभु बैठे रहो जी मेरी नाव में ।
मेरी .....

V

नाव लेने लगी हिचकोले,
तब तो केवट से श्रीराम बोले ।
केवट नाव को संभाल, गंगा आई तेज धार,
ये तो डूबेगी मझधार, तूने बल्ली न लगाई है नाव में।
मेरी .....

VI

प्रभु रास्ता नहीं अब मेरा,
जब नाव में है डेरा तेरा ।
भव सिन्धु है अपार, लाखों बेड़े किये पार,
मेरी नाव को भी तार, प्रभु ठोकर लगादो मेरी नाव को ।
मेरी .....

VII

ऐसा सुन कर राम मुस्कुराए,
लक्ष्मण को क्रोध चढ़ आए ।
तभी बोले अयोध्या नाथ, केवट करो शान्ति धार ।
लक्ष्मण करो शान्ति धार, मुझे केवट ने खरीदा इस नाव में
मेरी .....

VIII

केवट मन में बहुत शरमाया,
और नाव किनारे लाया ।
केवट यूं ही कहता मन में, सूरज डूबे इक क्षण में ।
प्रभु जायें नहीं बन में, बस बैठे रहो जी मेरी नाव में ।
मेरी .....

IX

प्रभु देने लेगे उतराई,
मेरे पास न पैसा न पाई ।
करो मुंदरी तुम स्वीकार, तेरा होगा बेड़ा पार ।
प्रभु बैठे रहो जी मेरी नाव में ।

मेरी .....

X

जैसे तुम हो खिवैया वैसे हम हैं,
भाई भाई से लेना शरम है ।
मैने की है गंगापार,
तुम भी करना भव से पार ।
ये ही दीन की पुकार,
प्रभु बैठे रहो मेरी नाव में ।

मेरी .....

श्रीराम

भजन

राम कहो, राम कहो, राम कहो बावरे,
अवसर न चूक भोंदू,
पायो भलो दाव रे ।

रामजी नूं गाई गाई,
राम को रिझाव रे ।
राम जी के चरण कमल,
चित्त माहिं लावरे ।
राम कहो.....

कहत मलूक दास,
छोड़ दे तू झूठी आस,
आनन्द मगन होइ के,
हरि गुण गावरे।
राम कहो.....

श्री राम

भजन

हमारे हैं श्री रघुनाथ, हमें किस बात की चिन्ता,
चरण पर रख दिया जब माथ, तो किस बात की चिन्ता ।

II

किया करते हो तुम दिन रात, क्यों बिन बात की चिन्ता,
तेरे स्वामी को रहती है, तेरी हर बात की चिन्ता ।

III

न खाने की न पीने की, न मरने की न जीने की,
रहे हर श्वास में भगवान के, प्रिय नाम की चिन्ता ।

IV

विभीषण को अभय पद दे दिया, लंकेश पल भर में,
उन्हीं का कर रहे गुणगान, हमें किस बात की चिन्ता।

V

हुई दासों पर कृपा, बनाया दास प्रभु अपना,
उन्हीं के हाथ में है हाथ, हमें किस बात की चिन्ता ।
हमारे हैं श्री रघुनाथ .....

श्रीराम

वन्दना

रामजी मेरी वन्दना स्वीकार हो,
मैं करूँ प्रणाम मम उद्धार हो ।

II

आरती पूजा नहीं मैं जानती,
इक दया तेरी से बेड़ा पार हो ।
रामजी.....

III

है यही इच्छा प्रभु इस दास की,
शीश मेरा हो तुम्हारा हाथ हो ।
रामजी.....

IV

जगत के सब झंझटों को छोड़ दूं,
नाम तेरा ही मेरा आधार हो ।
रामजी.....

V

डूबता भवसिन्धु में तुम तार दो,
मेरी नैया के तुम्ही पतवार हो ।
रामजी.....

नोटः जो कुछ भी तुम प्राप्त करते हो, सब प्रभु के अर्पण कर दो । फिर आनन्द ही आनन्द है ।

श्रीराम

भजन

तेरी शरण श्री राम मैं आयो ।
चरण कमल की सेवा दीजै,
चेरा कर राखो हरि जायो ।

तेरी .....

II

धन धन मात पिता सुत बन्धु,
धन जननी जिन गोद खिलायो ।

तेरी .....

III

धन जीवन तेरे लेखे लागे,
धन गुरू जिन हरि नाम सुनायो ।

तेरी .....

IV

धन धन शीश झुके तेरे आगे,
धन मस्तक अहंकार गवायो ।

तेरी .....

V

धन्य श्रवण तेरा नाम सुने जो,
धन लोचन तेरा रूप लुभाइओ ।

तेरी .....

VI

धन नासिका तुलसी दल सूंघे,
धन रसना तेरा यश गायो ।

तेरी .....

VII

धन धन चरण चलत तीरथ को,
धन धन कर हरि सेव कमाइओ ।

तेरी .....

VIII

धन-धन-धन परमारथ लागे,
धन्य वह मन हरि पद लपटाओ।

तेरी .....

IX

आत्मा नन्द प्रीति कर हरि सिंउ,
जनम अनेक महादुख पायो।

तेरी .....

श्रीराम

भजन

मेरी झोंपड़ी दे भाग अज खुल जानगे,

राम आनगे.....

मेरे खट्टे मिट्ठे बेर प्रेम नाल खानगे ।

राम आनगे.....

II

आये बना विच राम जी मैं सुनके 2

रखे खट्टे मिट्ठे बेर चुन चुन के-हाँ चुन 2 के,

दयावान मैनूं चरणां दे नाल लानगे ।

राम आनगे.....

III

ओना ऊच नीच जात नइओ वेखणी,

अच्छी बुरी वी सौगात नइओ वेखणी,

मेरी शरधा नू वेख राम भोग लानगे ।

मेरी झोपड़ी.....

IV

मैनू कोई वी न जाच नित नेम दी .....
एनां बेरा विच रस मेरे प्रेमदी,
जिनू खांदया ही राम मेरे रज जानगे ।

राम .....

V

मैनू पाठ पूजा दी कोई वल ना.....
मेरे विच गुराा वाली कोई गल ना,
फेर किस तरह ओ बेड़ा मेरा पार लानगे।

राम आनगे .....
मेरी झोपड़ी .....

श्रीराम

भजन

पत्ते पत्ते डाली डाली, मेरा राम वसदा,
सारी सृष्टि दा है वाली मेरा राम सभदा ।

II

किसने जाणी तेरी माया, किसने भेद तेरा है पाया,
ऋषि मुनियों ने तैंनू ध्याया, मेरा राम सभदा ।
पत्ते पत्ते .....

III

ये संसार है तेरा मंदिर, तू है समाया सबदे अंदर,
बस जा मेरे वी मन अंदर, मेरा राम सभदा .....
पत्ते पत्ते .....

IV

राम दे रूप दी छटा निराली,
अखियाँ पीवण भर भर प्याली ।
दर तो जावां ना मैं खाली–मेरा राम सभदा .....
पत्ते पत्ते .....

V

सबदे मालिक पालन हारे,
दर्शन दो मेरे राम प्यारे।
राँहा तक तक नैना हारे – मेरा राम सभदा।
पत्ते पत्ते .....

श्रीराम

भजन

मेरे बाँके बिहारी लाल,
नज़र तोहे लग जायेगी ।
मेरे प्यारे नज़र तोहे लग जायेगी ।

II

मोर मुकुट तेरे सिर पर सोहे,
गले बैजन्ती माल, नजर तोहे.....
मेरे बाके .....

III

गजब करे तेरी काली कमलिया,
तेरी टेड़ी मेड़ी चाल-नजर तोहे लग जायेगी।
मेरे बाँके .....

IV

पैरों में पैजनियां बाजै,
तेरे नूपुर करे कमाल - नजर तोहे .....
मेरे बाँके .....

V

मस्त बजे तेरी प्यारी मुरलिया,
नाचै दे दे ताल - नजर तोहे .....
मेरे बाके .....

भजन

मेरे बाँके विहारी लाल - गोपाल,
मन रखियो अपने चरणान में । -2
तन रखियो श्री कृपा धाम में ।
मेरे बाँके.....

II

तेरे सिर पर मुकुट विराज रहा,
कानों में कुन्डल साज रहा ।
तेरी मुरली करे कमाल - गोपाल ।
मन रखियो.....

III

तेरे नैनों में सुरमा साज रहा,
तेरे मुख में बीड़ा राज रहा ।
तेरी ठोड़ी पै हीरा लाल - गोपाल ।
मन रखियो.....

IV

तेरे हाथ लकुटिया राज रही,
पैरों में पायलिया साज रही ।
तेरी चितवन करे निहाल - गोपाल ।
मन रखियो.....

भजन

कृष्ण गोबिंद गोपाल गाते चलो,
अपनी मुक्ति का मार्ग बनाते चलो ।

II

देखना इन्द्रियों के न घोड़े भगे,
रातदिन इनको संयम के कोड़े लगें ।
अपने रथ को सुमार्ग पर लगाते चलो–कृष्ण.....

III

दु:ख में भूलो नहीं सुख में फूलो नहीं,
प्राण जायें मगर नाम भूलो नहीं ।
मुरली वाले को मन से रिझाते चलो ।
कृष्ण गोविन्द .....

IV

काम करते चलो नाम जपते चलो,
हर समय कृष्ण का ध्यान करते चलो ।
काम की वासना को मिटाते चलो–कृष्ण .....

V

याद आयेगी हरि को कभी न कभी,
कृष्ण दर्शन तो देगें कभी न कभी ।
ऐसा विश्वास मन में बढ़ाते चलो ।
कृष्ण गोविन्द .....

भजन

मैं तो जपूं सदा तेरा नाम,
दयालु दया करो ।
द्वार खड़े हैं भक्त तुम्हारे, अपनी दया के खोलो द्वारे,
पूरन हो सब काम, दयालु दया करो ।
मैं तो .....

II

भजन कीर्तन गाऊँ मैं तेरा,नित उठ नाम जपूं प्रभु तेरा,
कृष्ण कृष्ण श्री राम, दयालु दया करो ।
मैं तो .....

III

साधु संत की संगत देना, नाम अपने की रंगत देना,
अपना दास बना लो घनश्याम, दयालु दया करो ।
मैं तो .....

IV

मेरे मन की ज्योति जगा दो,
मुझको अपना रूप दिखा दो ।
पहुंचा दो निज धाम दयालु दया करो ।
मैं तो .....

श्रीराम

भजन

मांगा है मैंने श्याम से वरदान एक ही,
तेरी कृपा बनी रहे, जब तक है जिन्दगी ।

II

जिस पर प्रभु का हाथ हो, वह पार हो गया,
जो भी शरण में आ गया, उद्धार हो गया ।
जिसका भरोसा श्याम पर, डूबा कभी नहीं ।
तेरी कृपा .....

III

कोई समझ सका नहीं, माया बड़ी अजीब,
जिसने प्रभु को पा लिया, वोही है खुश नसीब,
जिसकी इज़ाज़त के बिना, पत्ता हिले नहीं ।
तेरी कृपा .....

IV

ऐसे दयालु श्याम से, रिश्ता बनाईए,
मिलता रहेगा आपको, जो कुछ भी चाहिए,
ऐसा करिश्मा होगा जो, हुआ कभी नहीं ।
तेरी कृपा .....

V

कहते हैं लोग जिन्दगी, किस्मत की बात है,
किस्मत बनाना भी, मगर उसके ही हाथ है,
कर ले यकीन अब मेरा, ज्यादा समय नहीं ।
तेरी कृपा बनी रहे .....

कीर्तन ध्वनि

श्री कृष्ण गोबिन्द हरे मुरारे,
हे नाथ नारायण वासुदेव ।

II

गोपाल मेरी यही प्रार्थना है,
भूलूं न मैं नाम कभी तुम्हारा ।
निष्काम हो के दिन रात गाऊँ–हे नाथ नारायण वासुदेव।
श्री कृष्ण .....

III

माता यशोदा हरि को बुलावें,
जागो उठो मोहन नींद खोलो ।
गायें रम्भाती तुमको पुकारे – हे नाथ नारायण वासुदेव।
श्री कृष्ण .....

IV

देहान्त काले तुम सामने हो,
बंसी बजाते मन को लुभाते,
यही गीत गाते मैं निज प्राण त्यागूं ।
हे नाथ नारायण वासुदेव
श्री कृष्ण .....

भजन

कृष्ण कहने से तर जायेगा ।
पार भव से उतर जायेगा ।।

II

होगी घर-घर में चर्चा तेरी,
जिस गली से गुजर जायेगा ।
कृष्ण कहने से .....

III

बड़ी मुश्किल से नर तन मिला,
क्या पता फिर किधर जायेगा ।
कृष्ण कहने से .....

IV

सब कहेंगे कहानी तेरी,
काम ऐसा जो कर जायेगा ।
कृष्ण कहने से .....

V

उसके आगे तू झोली फैला,
दाता झोली को भर जायेगा ।
कृष्ण कहने से .....

हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे,
हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे !

भजन

अब आन मिलो घनश्याम,
बहुत दिन बीत गए ।

II

राधा की अखियन के तारे,
मेरे भी बन जाओ सहारे,
भक्तों के भगवान, बहुत दिन बीत गए ।
आन मिलो .....

III

मुरली वाले मुरली बजा जा,
सोए हुए मेरे भाग्य जगा जा ।
ओ मीरा के घनश्याम, बहुत दिन बीत गए ।
आन मिलो .....

IV

नरसी भगत की हुण्डी तारी,
सावंलशाह बन आए मुरारी ।
ओ नरसी के सुन्दर श्याम, बहुत दिन बीत गए ।
आन मिलो .....

V

मन मंदिर में रास रचा जा,
रूप सांवला दरस दिखा जा,
अब जीवन की हो गई शाम-बहुत दिन बीत गए।
आन मिलो .....

पंजाबी भजन

मैं बलिहारी सतगुरु मेरे, सतगुरु आए मेरे बेड़े ।

II

ऐना गुरां नू मैं नैना विच बसा लवां,
खोल अखियाँ मैं दरशन पा लवां ।
दीन दयालु सत्गुरु मेरे, सत्गुरु आए मेरे बेड़े ।
मैं बलिहारी .....

III

एदे दर उत्ते मौजा ते बहारा ने,
संगता खड़िआ ने बन के कतांरा ने ।
पार उतारो सत्गुरु मेरे, सत्गुरु आए मेरे बेड़े ।
मैं बलिहारी .....

IV

जेड़े सुबह शाम दर तेरे आंदे ने,
ओन्हां दे पल विच दुखड़े मिटांदे ने,
भरे भंडारे सत्गुरु मेरे, सत्गुरु आए मेरे बेड़े ।
मैं बलिहारी .....

V

ओतां कण 2 दे विच पए बसदे ने,
अपनी संगता नू राह पए दसदे ने,
बिगड़ी बना दो सत्गुरु मेरे-सतगुरु आए मेरे बेड़े ।
मैं बलिहारी .....

VI

असां दिल विच मंदिर बना लया,
अपने हृदय विच आसन लगा लया,
आन विराजो सत्गुरु मेरे-सतगुरु आए मेरे बेड़े।
मैं बलिहारी .....

VII

मेरे गुरां जी दा प्यार अनोखा है,
जेड़ा नाम लवे रंग चढ़े चोखा है,
चरणी लगा लो सतगुरु मेरे-सत्गुरु आए मेरे बेड़े।
मैं बलिहारी .....

VIII

मेरे सत्गुरु ब्रहम गिआनी हैं,
जग मग जगती जोत नूरानी हैं,
कर दो दूर मन के अंधेरे-सत्गुरु आए मेरे बेड़े ।
मैं बलिहारी .....

भजन

जब सतगुरु आते हैं, तब खुशिया आती हैं,
ले लेके चरण धूलि, प्रेमी मुस्काते हैं ।

II

सतगुरु के आने से, सदा मंगल होता है,
गंगा की तरह पावन, मन निर्मल होता है,
वह अपने भक्तों को, सब कुछ दे जाते हैं।
जब .....

III

तन मन धन के सारे, दुख दूर करे दाता,
विनती निज भक्तों की, मंजूर करे दाता,
विश्वास जो करते हैं, वह सब कुछ पाते हैं।
जब .....

IV

मेरा छोटा सा आंगन, खुशियो से था रुठा,
सतगुरु का दरश पाके, मन पंछी चहक उठा,
हम दरशन पा करके, फूले न समाते हैं ।
जब .....

V

सतगुरु की दया से ही, हम जीवन जीते हैं,
यहाँ नाम प्याले पी, हम धन्य हो जाते हैं,
करूणा बरसे हर पल, यही भिक्षा चाहते हैं ।
जब .....

श्रीराम

विनती

हथ विच माला नू फड़ के,
ध्यान सत्गुरु का धर के घरों टुर पइआ .....

II

अगों सत्गुरु जो मिल गए,
करनियाँ वाले जो मिल गए, चरनी डिग पइआ .....

III

सत्गुरु खिच्चां जो पाइंआ, असी दूरों चल आंइआ .....
रल मिल सभ्भे सइआं .....

IV

सतगुरु करनियाँ वाले, तुझ बिन कौन सवांरे,
पकड़ो मेरी बंइआ .....

V

सतगुरु रस्ता दिखाओ, मैनूं राम से मिलावो,
अखियाँ तरस रहिआं .....

VI

सतगुरु किरपा दिखाओ, मैनूं चरनी लगावो .....
अरजां कर रहिआं .....

VII

सतगुरु सिर ते हाथ रखिआ, प्रेम दा सिर ते हाथ रखिआ,
दरशन पाइ लइआ .....

भजन

मेरा आपकी कृपा से सब काम हो रहा है,
करते हो तुम कन्हैया, मेरा नाम हो रहा है !
मेरा आपकी.....

II

मेरी जिन्दगी में तुम हो, मेरे पास क्या कमी है,
मुझे और अब किसी की, दरकार भी नहीं है,
बस होता रहे हमेशा, जो कुछ भी हो रहा है,
करते हो तुम कन्हैया, मेरा नाम हो रहा है !
मेरा आपकी.....

III

करता नहीं मैं फिर भी, हर काम हो रहा है,
कान्हां तेरी बदौलत आराम हो रहा है,
मुझे यह पता नहीं है, यह क्या-क्या हो रहा है,
करते हो तुम कन्हैया, मेरा नाम हो रहा है !
मेरा आपकी.....

IV

पतवार के बिना ही, मेरी नाव चल रही है,
भक्तों को बिन ही मांगे, हर चीज मिल रही है,
मर्जी है तेरी दाता, अच्छा ही हो रहा है,
करते हो तुम कन्हैया, मेरा नाम हो रहा है !
मेरा आपकी.....

गुरु आराधना

मेरे देवा सतगुरु देवा, सारी उमर करां मैं तेरी सेवा कि

जय जय जय गुरुदेव .....

जो तेरी शरण में आवै, मन का सुख चैन वह पावै कि

जय जय जय गुरुदेव .....

मैं आवां दर तेरे आवां, तेरे रज रज दर्शन पावां कि

जय जय जय गुरुदेव .....

गुरु ब्रहमा विष्णु महादेव, इनका सा नहीं कोई देवा कि

जय जय जय गुरुदेव .....

तुम मेरी आंख के तारे, लगते हम सबको प्यारे कि

जय जय जय गुरुदेव .....

ईश्वर ही गुरु कहावै, वह भेष बदल कर आवै कि

जय जय जय गुरुदेव .....

गुरु तीन लोक से न्यारे, वह रहते दिल में हमारे कि

जय जय जय गुरुदेव .....

इन्हें ब्रहमा कहो या साँई, नानक कह दो या गोसाई कि

जय जय जय गुरुदेव .....

गुरु रज में तीरथ सारे, मन्दिर मस्जिद गुरुद्वारे कि

जय जय जय गुरुदेव .....

हम कितने हैं वडभागी, गुरुभक्ति हमें प्रिय लागी कि

जय जय जय गुरुदेव .....

गुरु हम से कछू न चाहें, अपना भी हमें लुटायें कि

जय जय जय गुरुदेव .....

गुरु कृपा जिन्हें मिल जाए, वह नाचे और नचाए कि

जय जय जय गुरुदेव .....

सब मिल के हरि गुण गाओ और जीवन सफल बनाओ

जय जय जय गुरुदेव .....

हरि ओम .....

श्रीराम

कीर्तन ध्वनि

हरि शरणम् हरि शरणम् हरि शरणम् हरि शरणम्

सखी री प्रेम से बोलो, हरि शरणम् 2

II

यही उपदेश ब्रहमा को, दिया था श्याम सुन्दर ने,

उनके वेदों से निकला, हरि शरणम् हरि शरणम् ।

सखी री .....

III

यही उपदेश नारद को, दिया था श्याम सुन्दर ने,

नारद की वीणा से निकला, हरि शरणम् 2 ।

सखी री .....

IV

यही उपदेश मीरा को, दिया था श्याम सुन्दर ने,

जहर के प्याले से निकला, हरि शरणम् 2

सखी री .....

V

यही उपदेश अर्जुन को, दिया था श्याम सुन्दर ने,
उनकी गीता से निकला, हरि शरणम् 2

सखी री .....

VI

गंगा की लहरों ने गाया, हरि शरणम् 2.....
साझ की बेला से निकला, हरि शरणम् 2.....
भौरों की गुंजन से निकला, हरि शरणम् 2.....
वर्षा की छम छम से निकला, हरि शरणम् 2....
यही उपदेश राम जी ने दिया है सारी संगत को,
संगत ने मिल करके गाया ।

हरी शरणम् 2.....
सखी री.....

भजन

रामजी से नेहा लगाय लयो रे,
पागल मेरा मनवां
रामजी को अपना बनाय लयो रे,
पागल मेरा मनवां !

II

पहली नेहा हनुमंत ने लगाई,
सोने की लंका जलाय गयो रे –पागल मेरो .....
रामजी से .....

III

दूसरी नेहा मीरा ने लगाई,
विष को अमृत बनाय गयो रे –पागल मेरा .....
रामजी से .....

IV

तीसरी नेहा शबरी ने लगाई,
झूठे 2 बेर खिलाय गयो रे –पागल मेरो .....
रामजी से .....

V

चौथी नेहा भक्तों ने लगाई,
राम नाम हीरे बिखराय गयो रे –पागल मेरो .....
रामजी से .....

श्रीराम

भजन

सांवरे ले चल परले पार,
जहाँ विराजै राधा रानी, अलबेली सरकार ।
साँवरे .....

II

पाप पुण्य सब तेरे अर्पण,
गुण अवगुण सब तेरे अर्पण,
यह जीवन भी तेरे अर्पण,
प्रेम सहित मन तेरे अर्पण,
मैं तेरे चरणों की दासी, तू मेरा प्राण आधार ।
साँवरे .....

III

तुझसे लगन लगा बैठी हूँ,
तुझको अपना बना बैठी हूँ,
अपना होश गंवा बैठी हूँ,
सांवरिया मैं तेरी रागिनी,
तू मेरा राग मल्हार
साँवरे .....

IV

आनन्द घन यहां बरस रहा है,
पत्ता पत्ता हरष रहा है,
दास तुम्हारा तरस रहा है,
तू मेरा प्रीतम, तू मेरा माझी,
कर दो बेड़ा पार ।
साँवरे ले चल परले पार .....

श्रीराम

सतगुरु दीनदयाल तों, वारी जां बलिहारी जां,
सभना के रखवाले तों, वारी जां बलिहारी जां,
वारी जां बलिहारी जां – वारी जां बलिहारी जां ।

II

सतगुरु मेरा बड़ा ही सोहराा,
ऐदे जिआ कोई होर न होराा,
सोने मुखड़े वाले तों, वारी जां बलिहारी जां ।
सत्गुरु .....

III

सतगुरु रूप गुरां दा प्यारा,
रोम रोम मारे लशकारा,
नूरी मुखड़े वाले तों, वारी जां बलिहारी जां ।
सत्गुरु .....

IV

दसवें द्वारे गुरु डेरा लाया,
नाम दा अजब जहाज बनाया,
नाम जपावन वाले तों, वारी जां बलिहारी जां
सत्गुरु .....

V

दुखियाँ दी गुरु पीड़ा हरदे,
सुन के देर जरा न करदे,
कष्ट मिटावन वाले तों, वारी जां बलिहारी जां ।
सत्गुरु .....

श्रीराम

काम की बातें

1. जब भी घर से बाहर निकलो प्रभु के नाम का स्मरण व स्तुति वन्दना करके निकलो ।
2. हर क्षण मृत्यु को याद रखो उसकी तैयारी करो ।
3. मृत्यु के भय से भगवान प्रीति बढ़ती है ।
4. भगवान की वन्दना शरीर से ही नहीं, मन से भी करो । वन्दना भगवान को प्रेम बन्धन में बाँध लेता है ।
5. घर में रहो, सुख भोगो, लेकिन आसक्ति न रखो ।
6. कम बोलो, धीरे बोलो, सत्य बोलो ।
7. हर क्षण प्रभु का चिन्तन करो व नाम जपने का अभ्यास करो ।
8. मन को सदैव पवित्र रखो, यही साथ जायेगा ।
9. मृत्यु को सुधारना है तो प्रत्येक क्षण को सुधारो ।

10. वासना का नाश व आसक्ति का त्याग करो ।
11. कथा सुनो, मनन करो व जीवन में उतारो ।
12. बारम्बार एक ही स्वरूप का चिन्तन करो ।
13. भगवान को सदैव अपने साथ अनुभव करो ।
14. सतसंग से अपनी भूलो का ज्ञान होता है ।
15. हमारा सबसे बड़ा दोष यही है कि स्वयं को सदैव निर्दोष मानते हैं ।
16. हर समय नाम जपने से प्रभु के साथ होने का अनुभव होता है ।
17. अधिक बोलकर अपनी शक्ति नष्ट न करें ।
18. सबसे प्यार करो, प्यार ही प्रभु का रूप है ।
19. सन्त जब ध्यान समाधि में हैं तो उन्हें मन ही मन नमस्कार करो स्पर्श न करो ।
20. प्रति दिन सतसंग अवश्य करो ।

पंजाबी भजन

सेवादार हाँ गुनहगार हाँ कुछ कह नहीं सकता,
दु:खा दे विच रह के भी, दु:ख सह नहीं सकता।

I

बख्श लो दाता गल पल्ला पाया, गलपल्ला पाया
अवगुण करके मैं बहुत पछताया, बहुत पछताया,
करके दया हुण माफ़ जी, करो इन्साफ़ जी मैं तरले पावां,
मौज त्वाडी विच रह के जी मै शुक्र मनावां ।
सेवादार .....

II

हुकुम आप जी दा कदे न मोड़ा 2
रख लवो चरणां विच हथ पया जोड़ां 2
हुण तो बना लो मैनूं दास जी, रखो पासजी,
मैं भुल बख्शावां ।
मौज त्वाडी विच रह के जी मैं शुक्र मनावां
सेवादार हाँ .....

श्री राम

पंजाबी भजन

मेरे रामजी जेहा सोहराा, होर नहिओं होराां ।
मेरे सतगुरू जेहा सोहराा, होर नहिओं होराां ।
मेरा गुरां जेहा सोहराा, होर नहिओं होराां ।
न होया न होराां, होर नहिओं होराां ।

2.

रंग मेरे राम जी दा गुलाबां विच नहीं,
रूप मेरे राम जी दा हिसाबां विच नहीं ।
मेरे राम जी .....

3.

प्रेम वाले तीर चलाई जांदे हो,
संगता नू अपना बनाई जांदे हो ।
मेरे रामजी .....

4.

मिट्ठे मिट्ठे बोल तेरे प्यारे लगदे,
दर्शन कर असी नइयों रजदे ।
मेरे रामजी .....

5.

मिट्ठी मिट्ठी बंसरी बजाई जांदे हो,
सखियाँ नू नाच नचाई जांदे हो ।

मेरे रामजी .....

6.

होंठा उत्ते लाली ऐ गुलाब वरगी,
मेरे राम जी जेहा कोई नही हमदर्दी ।

मेरे रामजी .....

7.

मिट्ठी मिट्ठी वाणी सुनाई जांदे हो,
ब्रहम ज्ञानी सबनू बनाई जांदे हो ।

मेरे रामजी .....

श्रीराम

भजन

गुरु जी ! तोरे चरण प्रीति मोरी लागी ।

2.

गुरू चरराान के हेतु तज्यों सब,
मन निरमल मति जागी ।

गुरूजी .....

3.

योगासन से सुरत करी जब,
सबहिं करम फल त्यागी ।

गुरूजी .....

4.

जनम जनम के पाप धुले सब,
हो गयो मैं वडभागी ।

5.

माधव शबद समझ गुरूवर के,
बने अमर बैरागी ।।

गुरूजी .....

श्री राम

भजन

साँवरिया नन्दलाल हमारे ।

2.

मोर मुकुट सिर कानन कुन्डल,
माथे तिलक विशाल तुम्हारे ।

साँवरिया .....

3.

कटि में किंकिंन पग में नूपुर,
उर बैजयन्ती माल तुम्हारे ।

साँवरिया .....

4.

कर मुरली अधरन धर टेक,
होवे शब्द रसाल तुम्हारे ।

साँवरिया .....

5.

बलिहारी तिरछी चितवन पै,
माधव हुए हैं निहाल हमारे ।

साँवरिया .....

श्रीराम

भजन

जय जय जय गुरूदेव ! तुम्हारी ।
ज्ञान पुंज ज्योर्तिमय पद नख,
जाऊँ जाऊँ बलिहारी ।

जय जय .....

अटल अटूट शब्द मय सतसंग,
देत समझ अधिकारी ।

जय जय .....

बिन गुरु चरन प्रीति उरराखे,
होत न नर अधिकारी ।

जय जय .....

तुम्हारी कृपा मिलेंगे "माधव",
मोहि भरोसो भारी ।

जय जय .....

श्रीराम

बधाई भजन

जन्मे हैं राम रघुरइआ, अवधपुर में बाजे बधईया ।
राजा दशरथ गइयां लुटावै,
कंगना लुटावै तीनों मैया ।

अवधपुर .....

राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुध्न,
गोदी में खेले चारों भइआ ।

अवधपुर .....

सारी अयोध्या में धूम मची है,
भारी भीड़ अगँनइया ।

अवधपुर .....

माधव कहै शिव डमरू बजावै,
आशिष दे गौरा मइया ।

अवधपुर .....

शील

बधाई भजन

मथुरा में जन्मे कन्हैया,
और गोकुल में बाजे बधइया,

2.

बसुदेव और देवकी को दुख लखि आयो,
नंद और जशोदा के लाल कहायो ।
घर घर के माखन चुरईयो,
और गोकुल मे बाजे बधईया ।।

मथुरा .....

3.

कुंज गलिन में नाचै और गायें,
ग्वाल बाल संग धूम मचावे ।
वन वन में मुरली बजईया,
और गोकुल में बाजै बधईया ।।

मथुरा .....

4.

वृन्दावन में गइया चराये,
यमुना के तट पर सखिया बुलाये ।
राधा संग रास रचईया,
और गोकुल में बाजै बधईया ।।

मथुरा .....

5.

ऋषि मुनि जन सब ध्यान लगावै,
सब मिल माधव के गुण गावें ।
शंकर जी डमरू बजईया,
और गोकुल में बाजै बधईया ।।

मथुरा .....

श्रीराम

भजन चेतावनी

नाजुक घड़ी है आई, जीवन को याद करलो,
भज लो प्रभु को अपने, भक्ति से झोली भरलो ।

नाजुक .....

जिन को समझ के अपना, करता है पाप जग में,
वे भी न साथ देते, यह बात मन में धर लो ।

नाजुक .....

जम यातना न तुमको, सहना पड़े कभी भी,
सुमिरन करो प्रभु का, पापों से अपने डर लो ।

नाजुक .....

माधव का नाम जप के, सिर गोद में हो उनके,
आखिर तो मरना होगा, ऐसे ही क्षण में मर लो ।

नाजुक .....

श्रीराम

पंजाबी भजन

गुरू चरणां दे विच मत्था जदों टेकिया,
नूरी नूरी अंखा नाल गुरां मैनू देखिआ ।
तन मन मेरा हरिआ जी,
मैनू नशा नाम दा चढ़आ जी ।

मैनू नशा .....

2.

भोला भाला मुखड़ा यह अजब नूरानी है,
रूप तेरा देख के मैं हो गई दीवानी है,
तनमन मेरा हरिआ जी।

मैनू नशा .....

3.

नाम जपणा दी रीत सिखावदे,
सुरत शबद का मेल करावदे,

भव सागर तों पार करावदे,

ऐसा सतगुरू मेरा जी ।

मैनू नशा .....

4.

देख गुरां दी ऊँची करनी,

मत्था टेक के डिग पई चरनी,

भव सागर तों तरिआ जी ।

मैनू नशा .....

5.

सोहराा मन मोहना मेरे दिल विच वसदा,

दिल लुट लैंदा फिर खिड़ खिड़ हसंदा,

ऐसा सतगुरू मेरा जी,

मैनू नशा नाम दा चढ़आ जी ।

मैनू नशा .....

श्रीराम

राम कृपा (भजन)

पार भव सागरों उतार देंदी ए-गुरू किरपा,
बिगड़ी सबदी संवार देंदी ए-गुरू किरपा ।
गुरू कृपा राम कृपा ।।

2.

राम नाम बंदे नू जपान वाली ए,
नर तो नारायण बनान वाली ए,
डूबी हुई आत्मा नूं तार देंदी ए- गुरू कृपा .....

3.

मन मैल वालिया नूं रब्ब न मिले,
शुद्ध मन वालिया नूं आप मिले,
मना दी मैल उतार देंदी ए- गुरू कृपा .....

4.

पंजा वैरिआ नू पिछे धक देंदी है,
हथ दे के सबका तू रख लेंदी ए,
पंजा वैरिआ नू ललकार देंदी ए- गुरू कृपा .....

5.

माया दा सताया जदों जीव डोलदा,
दु:खी जीव गुरां दा सहारा टोलदा,
दु:खी होए जीवां नू सहारा देंदी ए- गुरू कृपा.....

6.

माड़यां कंमा तों मन मोड़ देंदी ए,
चित्त प्रभु चरणा च जोड़ देंदी ए,
भुलया नूं रस्ते पा देंदी ए- गुरू कृपा ....
पार भवसागरों.....

श्रीराम

पहाड़ी भजन

मेरे हारां वाले हारां वाले श्याम, मुझे अपना बना लेना,
मेरे मुरली वाले मुरली वाले श्याम, मुझे अपना बना लेना,
मुझे अपना बना लेना, अपने जैसा बना लेना ।
मेरे .....

2.

हाथ में गड़वी गंगा जल पानी,
मैं तो चरणा धुआऊँ सुबह श्याम, मुझे अपना बना लेना ।
मेरे .....

3.

चुन चुन कलियाँ दा हार पिरोया,
मैं तो हार पहनांवा सुबह शाम, मुझे अपना बना लेना ।
मेरे .....

4.

घिस घिस चन्दन भरिआ कटोरा,
मैं तो तिलक लगाऊँ सुबह शाम, मुझे अपना बना लेना ।
मेरे .....

5.

हाथ में थाली माखन मिश्री,
मैं तो भोग लगांवा सुबह शाम, मुझे अपना बना लेना।
मेरे .....

6.

हाथ विच धूप धूपा दियां बत्तियाँ,
मैं तो आरती उतारूँ सुबह शाम ।
मेरे .....

श्रीराम

पहाड़ी भजन

नाम तेरा है तारारा हारा कब तेरा दर्शन होगा,
जिसकी रचना इतनी सुन्दर, वह कितना सुन्दर होगा ।
जिसकी लीला इतनी सुन्दर,
वह कितना सुन्दर होगा ।

नाम तेरा है .....

जिसकी राधा इतनी सुन्दर,
वह कितना सुन्दर होगा ।

नाम तेरा है .....

जिसकी गोपियाँ इतनी सुन्दर,
वह कितना सुन्दर होगा ।

नाम तेरा है .....

जिसका कृपाधाम इतना सुन्दर,
वह कितना सुन्दर होगा ।

नाम तेरा है .....

श्रीराम

10 बातें सदैव याद रखो ।

1. हे राम जी हमारे हृदय से कभी बिसर न जाना ।
2. हमें सदैव धैर्य देना ।
3. मुझे निर्भयता देना । किसी से भी वाद विवाद न करूं ।
4. गीता का 12 वां अध्याय रोज पढ़ना है ।
5. अपनी इच्छा लिख कर रख दें कि अन्त समय में हमें बारहवां अध्याय अवश्य सुना दें ।
6. अपने आपको चैक करना है कि हमें क्या अच्छा लगता है-या हमारी मनोवृत्ति कैसी है ?
7. अभ्यास करना है कम बोलने का ।
8. कम खाना है, कम सोना है ।
9. सभी कार्य करते हुए नाम जपने का अभ्यास करो ।
10. ऐकान्त में बैठकर प्रभु के नाम व स्वरूप का चिन्तन करो ।

भजन

राम नाम सुखदाई भजन करो भाई,

यह जीवन दो दिन का ।

2.

यह तन है जंगल की लकड़ी,

आग लगे जल जाई-भजन करो भाई .....

राम नाम .....

3.

यह तन है कागज की पुड़िया,

हवा लगे उड़ जाई-भजन करो भाई .....

राम नाम .....

4.

यह तन है माटी का ढेला,

बूँद पड़े गल जाई-भजन करो भाई .....

राम नाम .....

5.

यह तन है श्वासों की माला,

तार टूट न जाई-भजन करो भाई .....

राम नाम .....

6.

जिनको तू समझा था अपना,

कोई न बनिआ तेरा अपना ।

राम जी को अपना बनाई-भजन करो भाई .....

यह जीवन दो दिन का ।

राम नाम .....

7.

कहत कबीर सुनो भाई साधो,

आवागमन मिटाई-भजन करो भाई .....

राम नाम .....

श्रीराम

पहाड़ी भजन

असां तेरे बिना कियां रैराा हो,
वृन्दावना रेया श्री कृष्णा ।
असां पाई लैराा दर्शन तेरा हो,
वृन्दावना रेया श्री कृष्णा ।

2.

गोपियाँ के घरों जादां माखण चुरादां,
तोड़ि देनदां, दईये रीया मटकियाँ हो ।
वृन्दावना रेया श्री कृष्णा ।

3.

बाँकी बाँकी गोपियाँ दी बइयाँ मरोड़दा,
तोड़ी देनदां, गोपया दे कंगणा हो ।
वृन्दावना रेया श्री कृष्णा ।

4.

नांदी नांदी गोपियाँ दे चीर चुरांदा,
टंगी देनदां, डालां हो ।
वृन्दावना रेया श्री कृष्णा ।

5.

जमुना तट जांदा बंसी बजांदा,
गोपियाँ दे दिलां तड़पांदा हो ।
वृन्दावना रेया श्री कृष्णा ।

6.

वृन्दावन जांदा रास रचांदा,
तोड़ी देनदा गोपियाँ दे दिल नुआ हो ।
वृन्दावना रेया श्री कृष्णा ।

राम जी के विचार

1. किसी के साथ दुर्व्यवहार मत करो, किसी की बुराई न देखो, इससे तुम्हारा मन मैला हो जायेगा, और मैले मन में प्रभु छुप जाते हैं ।
2. यदि दूसरों से सम्मान चाहते हो तो पहले स्वयं दूसरों का सम्मान करो ।
3. जैसा व्यवहार करोगे, वही तुम्हें प्राप्त होगा ।
4. तुम अपने आपको प्रभु के चरणों में समर्पण करो अर्थात् प्रभु के अपने बन जाओ, फिर प्रभु तो तुम्हारे ही हैं ।
5. जिसका रूप ध्यान करोगे, जिसका गुणगान करोगे - उसके गुरा तुममें अवश्य आयेंगे ।
6. सदैव प्रभु का चिन्तन करो । व्यर्थ प्रलाप में अपनी शक्ति का ह्रास न करो ।
7. सहन शीलता व धैर्य जीवन का आधार हैं ।

8. जो हर समय नाम जपने का अभ्यास करता है वही सन्त है । उसके मन में कभी विकार नहीं आता ।
9. जो प्रभु की ओर एक कदम बढ़ाता है भगवान उसकी ओर 100 कदम आगे बढ़ाते हैं ।
10. प्रभु से ऐकाकार करने से शक्ति प्राप्त होती है ।
11. स्वयं को परखो (चैक करो) कि ऐकान्त अच्छा लगता है या संसार अच्छा लगता है ।
12. अधिक बातें मत करो । नाम अधिक जपना है ।
13. भगवान को अपना समझो । उन्हें सदैव अपने निकट अनुभव करो ।
14. सदैव भगवान की शरण में रहो ।
15. गीता का बारहवां अध्याय रोज पढ़ने का अभ्यास करो ।

भजन

सतगुरू आपने कमाल कर दिया ।
हमारा सारा जीवन आपने खुशहाल कर दिया ।

2.

हम तो थे उलझन में, मार्ग दिखाया आपने,
हम तो थे नींद में, आके जगाया आपने,
आपकी मधुर वाणी ने हमको निहाल कर दिया ।
सतगुरू आपने.....

3.

हम तो थे अंधेरे में, दिखाया प्रकाश आपने,
ममता मोह में पड़े थे, इससे छुड़ाया आपने,
आपके आर्शीवाद ने हमें मालामाल कर दिया ।
सतगुरू आपने.....

4.

जीवन हमारा बदल दिया, आपके नित्य दर्शन ने,
घर की चार दीवारी से निकाल, तीरथ कराया आपने,
अपना साथ देकर आपने हमें निहाल कर दिया ।
सतगुरू आपने.....

5.

मिलने से पहले आपके जग में भटक रहे थे हम,
न कभी किया था दान पुण्य, न सतसंग कभी,
उपदेश देकर आपने बेमिसाल कर दिया ।

सतगुरू आपने.....

6.

आज के इस पावन अवसर पर,
अरदास इक हमारी है, राहों पर अपनी चलवा लेना,
वचनों का पालन सदा करवा लेना,
इससे पहले भी आपने कई बार निहाल कर दिया,
सतगुरू आपने कमाल कर दिया ।

सतगुरू आपने.....

श्री राम

भजन

जगत में उनकी मिटी है चिन्ता,
जो तेरे चरणों में आ चुके हैं ।
वही हमेशा हरे भरे है,
जो तेरे चरणों में आ चुके हैं ।

2.

न पाया तुमको अमीर बन कर,
न पाया तुझको फकीर बनकर,
उन्ही को दर्शन हुए है तेरे,
जो तेरे चरणों में आ चुके हैं ।
जगत में.....

3.

न पाया तुमको किसी ने बल से,
न पाया तुझको किसी ने छल से,
वही परम पद को पा चुके हैं,
जो तेरे चरणों में आ चुके हैं ।
जगत में.....

4.

किसी ने जग में करी भलाई,
किसी ने जग में करी हँसाई ।
वही सुमार्ग पर चल पड़े हैं,
जो तेरे चरणों में आ चुके हैं ।
जगत में.....

श्रीराम

पंजाबी भजन

नी मैं सोणी लगा, श्याम प्यारे दे नाल । -2
नी मैं सोणी लगा, नी मैं सोणी लगा । -2
नी मैं सोणी लगा.....

मेहंदी लगाई पिया तेरे नाम दी, -2
नी मैं रंगी रवां, श्याम प्यारे दे नाल । -2
नी मैं रंगी रवां, नी मैं रंगी रवां,
नी मैं सोणी लगा.....

पायल पहनी पिया तेरे नाम दी, -2
नी मैं नचदी रवां, श्याम प्यारे दे नाल । -2
नी मैं नचदी रवां, नी मैं नचदी रवां,
नी मैं सोणी लगा.....

चुनर ओढ़ी पिया तेरे नाम दी, -2
मैं सुहागन होई हां, श्याम प्यारे दे नाल । -2
मैं सुहागन होई हां, मैं सुहागन होई हां,
नी मैं सोणी लगा.....

लावां लइया पिया तेरे नाम दी, -2
मेरी डोली चले, श्याम प्यारे दे नाल । -2
मेरी डोली चले, मेरी डोली चले ,
नी मैं सोणी लगा.....

श्रीराम

भजन

श्यामा एवे न बजाया करो बंसरी,
कि घरों सानु मार पैंदी हे.....।
कि घरों सानु मार पैंदी हे.....हारावालया ।
तेरी चाल है मोरा वरगी, -2
के रूप तेरा चन वरगा, -2 हारावालया ।
श्यामा एवे.....

वे तू दो मावां दा जाया, -2
तैनू रज के किसे न खवाया, -2
कि घर-2 करे चोरियां, -2 हारावालया ।
श्यामा एवे.....

तेरी माँ ने ऊखल नाल बंधया, -2
कि पुतर पराया जान के, -2 हारावालया ।
श्यामा एवे.....

श्यामा तट यमुना दिया लहरा, -2
कि रल मिल रासां पावांगे, -2 हारावालया ।
श्यामा एवे.....

श्यामा तू जितया मैं हारी, -2
के बार-2 मगाँ माफियां, -2 हारावालया ।
श्यामा एवे.....

श्रीराम

शब्द

हरि राम राम राम रामा, जप पूरन होइ कामा ।

1.

राम गोविंद जपेंदिआ, होआ मुख पवित्र ।
हरि जस सुणीए जिस ते, सोई भाई मित्र ।।

2.

सभ पदारथ सभ फला, सरब गुणा जिस माहि ।
किउ गोविंद मनहु विसारिए, जिस सिमरत दुःख जाहि ।

3.

जिस लड लगिऐ, जीविए भवजल पईऐ पार ।
मिल साधू संग उधार होई, मुख ऊजल दरबार ।।

4.

जीवन रूप गोपाल जस, संत जना की रास ।
नानक उबरे नाम जप, दर सचै साबास ।।

राम जी राम राम

शब्द

मैं बन्दा बेखरीद, सच साहिब मेरा ।
जीउ पिंड सभ तिस दा, सभ किछ है तेरा ।।

1.

माण निमाणे तूं धणी, तेरा भरवासा ।
बिन साचै अन टेक है, सो जाणहु काचा ।।

2.

तेरा हुक्म अपार है, कोई अन्त न पाए ।
जिस गुरु पूरा भेटंसी, सो चलै रजाए ।।

3.

चतुराई सिआणपा, कितै कम न आइए ।
तुठा साहिब जो देवे, सोई सुख पाईए ।।

4.

जै लख करम कमाई अहि, किछु पवै न बंधा ।
जन नानक कीता नाम धर, होर छोड़िआ धंधा ।।

राम जी राम राम

श्रीराम

शब्द

मेरे सतगुरा मैं तुझ बिन अवर न कोई ।
हम मूरख मुगध सरणागति, कर किरपा मेले हर सोई।

1.

मैं मन तन बिरहु अति अगला,
किउ प्रीतम मिलै घर आइ ।
जा देखा प्रभु आपणा,
प्रभु देखिए दु:ख जाई ।।

2.

जाई पुछा तिन सजणा,
प्रभु कितु बिधि मिलै मिलाई ।
सतगुरू दाता हरि नाम का,
प्रभु आप मिलावै सोई ।।

3.

सतगुरू हर प्रभु बुझिआ,
गुर जेवड अवरू न कोई ।
हउ गुर सरणाई ढह पवा,
कर दइआ मेले प्रभु सोई ।।

4.

मनहठ किनै न पाइआ,
कर उपाव थके सभ कोई ।
सहस सिआणप कर रहे,
मनि कोरै रंग न होई ।

5.

कूड कपट किनै न पाइओ,
जो बीजै खावे सोई ।
सभना तेरी आस प्रभु,
सभ जीअ तेरे तूँ रासि ।।

6.

प्रभु तुधहु खाली को नहीं,
दरि गुरमुखा नो साबास ।
बिखु भउजल डुबदे कढ लै,
जन नानक की अरदास ।।

राम जी राम राम

ध्यान

ध्यान कैसे करें ?

ध्यान किसका करें ?

ध्यान कब करें ?

ध्यान क्यों करें ?

ध्यान से क्या लाभ हैं ?

ध्यान की अनुभूतियाँ :-

स्वामी विवेकानन्द जी के अनुसार

The greatest help to spiritual life is meditation.

Meditation is the means of unification of the subject & object.

Meditation means the mind is turned back upon itself.

ध्यान का अर्थ है - आत्मा का परमात्मा से एकीकरण । आत्मा का परमात्मा में आत्मसत होना । आत्मा का परमात्मा में विलीनी करण - आत्मा परमात्मा का एकत्व भाव - अद्वैतवाद ।

ध्यान का सांसारिक एवं आध्यात्मिक जीवन में विशेष महत्व है ।

ध्यान की प्राप्ति अनायास ही नहीं होती इसके लिए हमें जप-तप संयम, धारणा का सहारा लेना पड़ता है ।

जप-तप संयम के गुण भी हमें स्वतः प्राप्त नहीं होते । इसके लिए पूर्ण सद्गुरू की शरण में जाना पड़ता है -जो हमारा मार्ग प्रशस्त करते हैं । गुरू द्वारा शब्द लेकर जब शिष्य उस शब्द का अपनी अन्तरात्मा से एकत्व स्थापित कर लेता है तो यह गुण उसमें स्वतः प्रस्फुटित हो जाते हैं और ध्यान की स्थिति बन जाती है । गुरू शब्द से तात्पर्य शक्ति से है, गुरू उस शक्ति को धारण करते हैं और वही शक्ति वह अपने शिष्य में संप्रेषित करते हैं । उस शक्ति को प्राप्त कर शिष्य को अपनी आत्मा का ज्ञान हो जाता है ।

शिष्य के हृदय में गुरू के प्रति जितनी श्रद्धा होगी उतनी अन्तस्फूर्ति उत्कृष्ट होगी । जिसके पास श्रद्धा है - वह रसयुक्त बन जाता है अपने चारों ओर उसे प्रेम ही प्रेम नजर आता है । हृदय में आनन्द की लहरें उठतीं ही रहती है । कभी

आँखे नम हो जाती है तो कभी बरबस चेहरे पर मुस्कान व हँसी फूट पड़ती है । श्रद्धा हृदय की धड़कन बन जाती हैं । गुरू ही हमे निराकार से साकार तक पहुँचाते हैं ।

भगवद् गीता में भगवान श्री कृष्ण श्रेष्ठ भक्त के बारे में कहते हैं - "वे जिनका मन निराकार निर्गुण भगवान पर एकाग्र होता है, उन्हें अधिक कठिनाई होती है । परन्तु वे जिनका मन मुझ पर सगुण रूप पर एकाग्र है - मैं भवसागर से जन्म मृत्यु के चक्र से उनकी रक्षा करता हूँ ।"

गुरू पारब्रहम का सगुण रूप है । जब हम श्री गुरू से प्रार्थना करते हैं तो एक व्यक्ति से प्रार्थना नही करते - सर्वव्यापी शक्ति से प्रार्थना करते हैं, जो करोड़ो मील दूर रहकर भी हमारी आवाज सुन लेते हैं ।

ध्यान के लिए इन बातों को जानना आवश्यक है जैसे सद्गुरू में श्रद्धा होना, सद्गुरू के निराकार रूप को पहचानना । निराकार रूप का साकार रूप से प्रकटीकरण होना । भाव यह है कि सद्गुरू

शरीर नहीं है - शक्ति है । यदि हमें इस बात का ज्ञान हो जाएगा तो सद्गुरू करोड़ो मील दूर रह कर भी अपने सानिध्य की अनुभूति करवाते है और वह आनन्द प्रदान करते हैं जो सम्भवत: पास रह कर भी नहीं प्रदान करते । यदि गुरू पूर्ण समर्थ है और शिष्य पूर्ण श्रद्धावान व समर्पित है तो समय व स्थान की दूरी का कुछ भी प्रभाव नहीं दिखा पाती (व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर लिखा जा रहा है)

एक बार ध्यान की स्थिति बन जाने पर यह आवश्यक नहीं है कि आसन बिछाकर बैठकर ही ध्यान करें । चलते फिरते बातचीत करते भी आप ध्यान की स्थिति को अनुभव कर सकते हों वस्तुत: आपकी सुरति शब्द के साथ मिली रहनी चाहिए ।

गुरूदेव की कृपा का चमत्कार

सर्वप्रथम गुरूदेव को शत्-शत् प्रणाम करती हूँ जिनमें दया, करूणा और उदारता का अखुट भण्डार है । असम्भव को सम्भव करने की अपूर्व क्षमता है । गुरूदेव की छत्रछाया में मुँह से कुछ भी कहने की आवश्यकता नहीं बस एक मन हो शरणागति की ही आवश्यकता है ।

एक दिन एक थलसेना का आफिसर याचक बन कर खड़ा हो गया जिसकी नियुक्ति सीमा क्षेत्र में हुई थी । उसने रामजी से प्रार्थना की कि अपने साथ ले जाने वाले सभी सेनाधिकारियों को सकुशल घर वापिस ले आँऊ, ऐसा आर्शीवाद दीजिए । परम दयालु गुरूदेव ने आर्शीवाद के रूप में 'कर कृपा प्रभु दीनदयाला, तेरी ओर पूर्ण गोपाला'' के स्टीकर प्रत्येक हथियार पर लगाने के लिए दिए । शरणागत कमांडर ने वैसा ही किया ।

युद्ध क्षेत्र में दिन रात गोलियों की वर्षा होती थी बड़ी-बड़ी तोपों के गोले दागे जाते रहे । बीहड़

जंगलों में दुश्मनों से युद्ध होता रहा । "कर कृपा का मंत्र" एवं रामजी का आर्शीवाद कवच बन कर रक्षा करता रहा । कट्टर से कट्टर आतंकवादी मारे गए । काफी बड़ी मात्रा में गोला बारूद पकड़ा ।

एक दिन साक्षात् रामजी ने अपना चमत्कार दिखाया । दबे कदमों से बढ़ रही सेना ने देखा कि घात लगाकर एक आतंकवादी बहुत सा गोला बारूद रखकर बैठा है । यह सोचकर कि सामने से आती सेना की टुकड़ी को वह खत्म कर सकता है । हमारी फौज ने जैसे ही उस पर निशाना साधा, उस अफसर ने गोली चलाई, पर दुर्भाग्य वश गोली राइफल में अटक गई । इतने में वह आतंकवादी सर्तक हो गया । उसने हथगोला फेंका, परन्तु वह हथगोला फटा ही नहीं और हमारे जवानों ने सामने खड़े आतंकवादी को ढेर कर दिया ।

इस प्रकार गुरूदेव के आर्शीवाद एवं मंत्र के चमत्कारी प्रभाव के कारण सभी जवान सुरक्षित हैं ।

एक बहन

"कर कृपा मंत्र का चमत्कार"

कर कृपा प्रभु दीनदयाला ।
तेरी ओट पूर्ण गोपाला ॥

हमारे एक रिश्तेदार बाहर रहते हैं । उनका बड़ा बेटा सात साल हो गए घर से चला गया, सभी घर वाले परेशान थे ।

हम वहाँ गए तो हमने उन्हें "बिछुड़या मेले प्रभु हरि दरगह का बसीठ, कर कृपा प्रभु दीनदयाला, तेरी ओट पूर्ण गोपाला" । इस का जाप करने का परामर्श दिया परेशानी के कारण शायद वह इस मंत्र का जाप नहीं कर पाये । कुछ समय बाद पुनः हम वहाँ गए । उनकी दशा देखकर हमने पुनः उन्हें इस मंत्र का जाप करने के लिए कहा कि यदि वह 40 दिन लगातार इस मंत्र का जाप करे तो उनकी समस्या हल हो जाएगी । कहकर हम आ गए । 17 दिन बाद ही फोन आ गया कि सात साल का बिछुड़ा बेटा अपने मां बाप को मिल गया । इस परिवार का विश्वास भी राम जी एवं मंत्र में दृढ़ हो गया ।

वह भी राम जी के परम भक्त बन गए ।

एक बहन

कर कृपा प्रभु दीनदयाला ।
तेरी ओट पूर्ण गोपाला ।।

हमारे सतगुरू हमें जाने अनजाने, न जाने हमें कितनी बार जीवन की सच्चाई बताते हैं इसलिए तो हर गुरूवार को हमे हमारी ही आँखों से उठाला दिखाते हैं ।

सफेद वस्त्र पहने ऐसे ही किसी दिन हमारी शोक सभा होगी । इस सभा में हमारे स्थान पर हमारी तस्वीर रखी होगी उस पर एक फूलों का हार होगा । धूप, दीप से हमारा सत्कार होगा । हमारे अवगुणों को भी गुणों में बदल कर लोग हमारा गुणगान करेंगे । कुछ आँखे सही में नम और हृदय में पीड़ा लिए होगी । कुछ नमी का बोध करा रही होगी । उस समय मेरे राम जी अपना आर्शीवाद एवं स्नेह बरसा रहे होंगे ।

हम संसार छोड़ने के बाद भी कृपा धाम में अवश्य होंगे । अपने सतगुरू और अपने गुरू मित्रों के चरणों में शीश झुका रहे होंगे । प्रभु करे मेरे सतगुरू का सदा दरबार लगा रहे । हमारे साथ सदैव हमारे राम जी की आर्शीवाद रहे ।

आनन्द साहिब

आनन्द भया मेरी माए, सतगुरू मैं पाया,
सतगुरू तां पाया सहज सेती, मन वजियां वधाइयां ।
राग रतन परिवार भरिया, शबद गावण आइयां ।।
शबदों ता गावों हरि केरा, मन जिनी बसाइयां,
कहे नानक आनन्द होआ, सतगुरू मैं पाया ।।
ए मना मेरिया तू सदा रहो हरि नाले,
हरि नाल रहो तू मन मेरे दुख सब विसारना ।
अंगीकारो करे तेरा कारज सब संवारना ।।
सबनां गला समरथ सुआमी, सो क्यों मनो विसारे,
कहे नानक मन मेरे सदा रहो हरि नाले ।।
साचे साहिबा क्या नही घर तेरे,
घर तां तेरे सब कुछ है, जिस देवे सो पाए ।
सदा सिफत सलाह तेरी नाम मन वसाए ।।
नाम जिनके मन वसआ, बाजे शबद घनेरे,
कहे "नानक" साचे साहिबा, क्या नहीं घर तेरे ।।
साचा नाम मेरा आधारो,
साच नाम आधार मेरा ।

जिन भुखां सब गवांइया,
घर शांत सुख मन आये वसआ ।
जिन इच्छा सब पुजाइया,
सदा कुरबान कीता गुर विटहु ।
जिस दीयां एह वडियाइया,
कहे नानक सुनो सन्तों शबद धरो पिआरो ।
साचा नाम मेरा आधारो ।
बाजे पंच शब्द तित घर सभागे,
घर सभागे शब्द बाजे कला जित धरि धरिआ ।
पंच दूत तुध वस कीते, काल कंटक मारआ,
धुरि करम पाया तुध जिनको से नाम हरि के लागे ।।
कहे नानक तह सुख होआ, तित घर अनहद बाजे ।
आनन्द सुनो बडभागियो, सगल मनोरथ पूरे,
पारबह्म प्रभु पाया उतरे सगल वसूरे ।।
दुख, रोग संताप उतरे, सुणी सची वाणी,
संत साजन भए सरसे, पूरे गुर ते जाणी ।।
सुनते पुनीत कहते पवित्र, सतगुरू रहिआ भरपूरे,
बिनवंत "नानक" गुरू चरण लागे बाजे अनहद तूरे ।।

श्लोक

पवन गुरू पाणी पिता, माता धरत महत,

दिवस रात दुई दाई दाइआ, खेले सकल जगत ।

चंगिआइयां बुरिआइयां वाचै धरम हदूरि,

करनी आपो आपनी के नेरे के दूरि ।

जिनी नाम धिआइया, गए मुसकति घाल,

नानक ने मुख उजले, केती छुटी नाल ।

अरदास

तूँ ठाकुर तुम पै अरदास,
जिऊ पिंड सब तेरी रास ।
तुम मात पिता हम बालक तेरे,
तुम्हरी किरपा ते सुख घनेरे ।
कोई न जाणे तुमरा अन्त,
ऊँचे ते ऊँचा भगवंत ।
सगल समग्री तुमरे सूत्र धारी,
तुम ते होय सो आज्ञाकारी ।
तुम्हरी गति मति तुम्ही जानी,
नानक दास सदा कुरवाणी ।
तुध आगे अरदास हमारी,
जीऊ पिंड सब तेरा वाहिगुरू ।
कहो "नानक" सब तेरी वडिआई,
कोई नाम न जाने मेरा वाहिगुरू ।

हे राम जी हमारी बुद्धियों को अपनी ओर प्रेरित करो ।

ऊँ भूर्भव: स्वाह: तत्सवितुर्वरेण्यम्
भर्गो देवस्य: धीमहि धियो यो: न: प्रचोदयात् ।
ऊँ शान्ति शान्ति शान्ति: .....(3 बार)

प्रार्थना

हे परम पिता परमात्मा, अखण्ड ब्रह्मांड के स्वामी, अच्युत अविनाशी, पारब्रह्म परमेश्वर । हमें अपनी भक्ति दो, शक्ति दो, नाम दो, ध्यान दो ।

हे प्रभु ऐसी कृपा करो,
यह हाथ आपकी ही सेवा करें ।
चरण आपके लिए ही चलें ।
नेत्र आपका ही पवित्र दर्शन करें ।
कर्ण आपकी ही मधुर वाणी सुनें ।
हृदय में आपका ही ध्यान हो ।
मस्तिष्क में आपका ही चिन्तन हों ।

हे आकाल पुरख ।

मेरे मन को सच्ची प्रीति का उत्साह बख्शो।
उस प्रीति से पूर्ण आनन्द बख्शो,
ताकि मेरा दिन रात आपकी ही याद में बीते ।
मेरे नयनों को दर्शनों का आनन्द बख्शो ।
मेरे तप्त हृदय को शीतलता प्रदान करो ।

मेरे नयनों के जखीरे में अपनी कृपा भर दो।
अपनी कृपा से मेरे रोम-रोम को जीह्वा बना दो।
श्वास श्वास सिमरन दो ।
एक क्षण भी आपकी याद के बिना न बीते।
कल के सारे कर्त्तव्य कर्म आपके श्री चरणों
में अर्पित हैं ।

आगे कर्म करने के लिए मार्ग प्रशस्त करना ।
उन्ही संतो भक्तो का दर्शन कराना जिनके
दर्शन से आपका नाम चित्त में आए ।
पिछले चार पहर सुख से व्यतीत हुए है ।
आगे के चार पहर भी सुख से व्यतीत करना ।

हे परम पिता परमात्मा मुझे सत्य, सन्तोष, दया, धर्म, शुचि, नम्रता, पवित्रता, धैर्य, धारणा, समाधि, मौन, प्रेम, शान्ति, सत्संग, आरोग्यता, आलौकिकता, सेवा, सिमरण, जप, तप, संयम, गुणग्राहकता प्रदान करें । आपकी अति कृपा होगी ।

श्रीराम

आरती (सतगुरू भगवान जी की)

ऊँ जय सतगुरू देवा, मेरे प्यारे गुरू देवा ।
अपने भक्तों के संकट, तुम दूर करो देवा ।।

ऊँ जय .....

तुम हो अलख अविनाशी, तुम अन्तर्यामी ।
तुम ही कर्ता धर्ता, तुम सबके स्वामी ।।

ऊँ जय .....

अपना रूप दिखाते, कण-कण व्याप रहे ।
तेरी कृपा का मेरे सतगुरू, हर पल ध्यान रहे ।।

ऊँ जय .....

हर पल तुझको ध्याऊँ , तेरे गुण गाऊँ ।
बार-बार चरणों में, मै प्रभु शीश नवाऊँ ।।

ऊँ जय .....

घट में आप विराजे, मन मन्दिर साजे ।

बाजे अनहद बाजे, जय श्रीराम हरे ।।

ऊँ जय .....

जग मग ज्योति सुहावे, रूप तेरा प्यारा ।

श्वेत वर्ण उजियारा, सतगुरू है मेरा ।।

ऊँ जय .....

सब पर कृपा करो, मेरे प्यारे गुरूदेवा ।

क्षमा करो सब अवगुण, बस तेरी ही सेवा ।।

ऊँ जय .....

तेरे द्वारे आये प्रभु जी, करना आप रक्षा ।

इक पल भी न विसरे, नाम प्रभु जी तेरा ।।

ऊँ जय .....

आरती (नारायण भगवान जी की)

ऊँ जय श्री नारायण शरणम्-2
शरण में आए हम आपकी हम सब के पाप हरणम्।

जब-जब पाप बढ़े पृथ्वी पे, तब-तब दर्श दियो,
संतो की रक्षा कारण, दुष्टों का नाश कियो ।
ऊँ जय .....

अपने भक्तों के कारण युग-युग रूप धरयो,
राम कृष्ण गुरू नानक स्वंय को प्रकट कियो ।
ऊँ जय .....

पिछले अवगुण बख्शो आगे मार्ग देओ,
अपनी शरण में रखकर सगरे पाप हरो ।
ऊँ जय .....

ज्ञान भक्ति हमें दीजो, तामस दूर करो,
सात्विक श्रद्धा बढ़ा कर, हमरे कष्ट हरो ।
ऊँ जय .....

शरण में आए हम आपकी, विनती स्वीकार करो,
ज्ञान हीन हमें जानके, भव से पार करो ।
ऊँ जय .....

आरती (श्री शंकर भगवान जी की)

ऊँ जय शिव शंकर, जय महादेवा,

जय सच्चिदानद नमो नमः

शरण में आए अब हम तेरी, कृपा कर दो नमो नमः

ऊँ जय .....

मात-पिता,भाई-सुतबन्धु, तुम ही हो सब नमो नमः

ऊँ जय .....

भक्ति शक्ति दे दो सबको, पूर्ण आशा नमो नमः

ऊँ जय .....

विनती हमारी सुनलो स्वामी, करूणा सागर नमो नमः

ऊँ जय .....

विवेक वैराग्य ध्यान समाधि,

हम सबकी लगा दो नमो नमः

ऊँ जय .....

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणंम् त्वमेव,
त्वमेव सर्वम् मम् देव देव ॥

सर्वेभवन्तु सुखिना
सर्वेसन्तु निरामया ।
सर्वेभद्राणी पश्यन्तुमाय,
कश्चिद दुख भागभवेत ॥

सब पर दया करो भगवान ।

सब पर कृपा करो भगवान ।

सबका सब विधि हो कल्याण ।

सब जन लेवें तुम्हारा नाम ।

तभी होगा सबका कल्याण ।

धर्म की जय हो ।

अधर्म का नाश हो ।

प्राणियों में सद्भावना हो ।

विश्व का कल्याण हो ।

हर हर महादेव, हर हर महादेव,

जय जय श्री राधे - 3 बार

जय जय श्री राम

श्रीमति राम जी द्वारा रचित पुस्तकों की नाम सूची

प्रथम	.....	पूजा के फूल	.....	मई	1981
द्वितीय	.....	अमृत वर्षा	.....	सितम्बर	1981
तृतीय	.....	ज्ञान अंजन	.....	मई	1982
चतुर्थ	.....	भक्ति सार	.....	सितम्बर	1982
पंचम	.....	प्रेमा भक्ति	.....	अप्रैल	1983
षष्ठ	.....	संत वाणी	.....	जून	1983
सप्तम्	.....	अनमोल वाणी	.....	जून	1984
अष्टम्	.....	प्रेम पीयूष	.....	दिसम्बर	1985
नवम्	.....	अमर प्रेम	.....	अक्टूबर	1987
दशम्	.....	प्रेमानुभूति	.....	दिसम्बर	1989
एकादशम्	.....	प्रेम साधना	.....	दिसम्बर	1990
द्वाद्वशम्	.....	प्रेम मंथन	.....	जून	1993
त्रयोदशम्	.....	प्रेम अमृत	.....	अगस्त	1995
चर्तुदशम्	.....	प्रेम पुष्प	.....	दिसम्बर	1998
पञ्चदशम्	.....	प्रेम दर्शन	.....	दिसम्बर	2000
षोऽश	.....	प्रेम ज्योति	.....	दिसम्बर	2001

निर्देश :-

अच्छी पुस्तके आपकी सच्ची सखी व जीवन सहचर है,
जो समय-समय पर आपको चेतावनी देती रहती है ।
अत: पढ़ो, मनन करो व अलौकिकता का अनुभव करो ।

श्री राम

''कृपाधाम''

C-2B, जनक पुरी, नई दिल्ली-110058. PH.:5517225

श्री राम जी के सत्संग का समय प्रतिदिन

प्रात: 9.00 बजे से 10.30 बजे तक

रात्रि: 7.30 बजे से 8.30 बजे तक

राम जी राम राम

कृपा-धाम

कर कृपा प्रभु दीन दयाला ।
तेरी ओट पूर्ण गोपाला ॥

राम जी राम राम

Design & Printed by :

PRINT CENTER

WZ-43D/11, POSSANGI PUR MARKET, JANAK PURI, NEW DELHI-110058
TEL. : 5520238, 5525646